ISSN 2277-7660

पर्यावरण संरक्षण को समर्पित एक अनूठी पारिवारिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं आध्यात्मिक मासिक पत्रिका

अमर ज्योति

वर्ष : 71 | जुलाई, 2020 | अंक : 07 | मूल्य : 100 रु. (वार्षिक)

प्रकाशक :
बिश्नोई सभा, हिसार

संपादक
डॉ. मनबीर

सह संपादक
श्रीमती अनिला बिश्नोई

कार्यालय पता :
'अमर ज्योति'
श्री बिश्नोई मन्दिर
हिसार - 125 001 (हरियाणा)
दूरभाष : 80590-27929
94670-90729
email: editor@amarjyotipatrika.com,
Website : www.amarjyotipatrika.com
सभा कार्यालय दूरभाष :
फोन : 01662-225804

इस पत्रिका में उल्लेखित सभी पद अवैतनिक एवं निष्काम सेवार्थ है।

सदस्यता शुल्क :
वार्षिक : ₹ 100
25 वर्ष : ₹ 1000

"अमर ज्योति में प्रकाशित लेख एवं विचार लेखकों के वैयक्तिक हैं। संपादक का इनसे सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है। लेख संबंधी आपत्तियों हेतु सीधे लेखक से सम्पर्क करें"

सभी विवादों का न्यायक्षेत्र हिसार न्यायालय होगा।

'अमर ज्योति' का ज्ञान दीप अपने घर आँगन में जलाइये।

विषय अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
सबद-95	3
सम्पादकीय	5
साखी	6
गुरु जाम्भोजी द्वारा वर्णित यज्ञ ही कोरोना मुक्ति का सरल उपाय	8
सब मिलकर एक दीपक जलाएँ	11
गुरु जंभेश्वर भगवान द्वारा प्रतिपादित बिश्नोई धर्म नियम कोरोना काल में अत्यंत उपयोगी	12
गुरु जांभोजी, विश्व चिंतन और वैज्ञानिक संदर्भ	16
आत्मा के अस्तित्व पर विमर्श	20
बधाई सन्देश	25
प्रकृति हुयगी निहाल	26
वर्तमान संदर्भ में जम्भेश्वर वाणी में शिक्षक का बच्चों को संस्कार देने में योगदान	27
नशे की बेड़ियों में उलझता समाज	29
संत वील्होजी के काव्य में संवेदनशीलता	30
संत वील्होजी के काव्य में संवेदनशीलता	34
जीया नै जुगति मुवां नै मुक्ति	36
जन्माष्टमी विशेषांक के लिए विज्ञापन हेतु सूचना	38
सामाजिक हलचल	39-42

सबद-95

दोहा

देव तणै दरबार में, ब्राह्मण आयो एक।
समझन को बहु दिवस है, अब का भयो अलेख।

गुरु जम्भेश्वर जी के पास में दर्शनार्थ एक ब्राह्मण आया। अनेक वार्ताएं होने लगी, तब वह ब्राह्मण वाद-विवाद में उलझ गया तो श्री देवजी ने कहा कि समय बड़ा ही अमूल्य है तथा बहुत ही कम मिला हुआ है, वह भी हाथों से निकलता जा रहा है। तब वह ब्राह्मण कहने लगा कि महाराज! समय तो बहुत ही लंबा है। इतनी लम्बी आयु में तो हम कभी भी ईश्वर आराधना तथा शुभ कार्य कर सकते हैं। आप हमें बार-बार क्यों कहते हैं? तब श्री देवजी ने सबद सुनाया-

सबद-95

वाद-विवाद फिटाकर प्राणी, छोड़ो मन हट मन का भाणों।

भावार्थ- हे प्राणी! तूँ इस कच्ची काया को प्राप्त करके इस व्यर्थ के वाद-विवाद को छोड़ दे, क्योंकि यह आदत कभी भी श्रद्धा-विश्वास उत्पन्न नहीं होने देगी तथा बिना श्रद्धा-विश्वास के ज्ञान विवेक को प्राप्त नहीं हो सकेगा और विवेक-ज्ञान शून्य जीवन सदा दुखमय ही रहेगा। इसलिये इस जिह्वा को सदा ही वश में रखा करो तथा अपने मन का हठ कि मैं जो कुछ कहता हूँ यही सत्य है और अपने ही मन की अच्छी लगने वाली बात को दूसरे से जबरदस्ती मनवाने का प्रयत्न न करो। इस आदत को छोड़ना ही होगा। यही आदत दुनिया के जितने भी झगड़े-फसाद होते है उनका कारण होती है।

कांही के मन भयो अंधेरो, कांही सूर उगाणों।
नुगरा कै मन भयो अन्धेरो, सुगरा सूर उगाणों।

जो व्यर्थ के बकवादी लोग हैं उनके तो मन में

अन्धेरा हो गया, क्योंकि वे लोग किसी भी जीवन सुधारक बात पर तो विश्वास करते नहीं है। जो भी अच्छी बात कही जाती है उसे वे तर्क द्वारा काट देते है तथा अन्य वे लोग है जो व्यर्थ का कुतर्क नहीं करते किन्तु सद्गुरु द्वारा कही बात को हृदय से स्वीकार करके, उन पर चलकर अपने जीवन को सफल बना लेते है। उनके हृदय में ज्ञान का प्रकाश हो जाता है। इसीलिये यही गुरु रहित जन नुगरा तथा गुरु धारण करने वाले सुगरा की पहचान है। जो गुरु वाणी को धारण करके जीवन को प्रकाश मय बना लें वही सुगरा है और जो गुरु वाणी को तर्क द्वारा काट कर तद्विपरीत जीवन को बना लें वही नुगरा है।

चरणभि रहीया लोयण झुरीया, पिंजर पड्यो पुराणों।
बेटा बेटी बहन रू भाई, सबसै भयो अभाणों।

इस प्रकार से यदि वाद-विवाद में पड़कर विजय की वासना में ही समय समाप्त कर देगा तो वृद्धावस्था आ जायेगी। फिर उस अवस्था में तो पैर चलने से रह जायेंगे, आंखें देखने से रह जायेंगी तथा यह सम्पूर्ण शरीर रूपी पिंजर प्राचीन हो जायेगा, तब इस जर्जरित पिंजरे से कोई भी प्रेम नहीं करेगा और तो क्या कहें तुम्हारे अपने ही प्रिय बेटा-बेटी बहन और भाई आदि

सभी को अप्रिय लगने लग जायेंगे। उस दयनीय अवस्था में पहुँच जाने पर तो तूँ कुछ भी नहीं कर सकेगा।

तेल लियो खल चोपै जोगी, रीता रहीयो घाणों।
हंस उडाणों पंथ विलंब्यो, कीयो दूर पयाणों।

जिस प्रकार से तिलहनों में से तेल निकाल लिया जाता है तो पीछे खली ही शेष रह जाती है। वह पशुओं के खाने के काम आती है तथा तिलहन पीसने वाली घाणी भी तेल रहित हो जाती है। उसी प्रकार से जब शरीर से युवावस्था रूपी तेल निकल जाता है तो पीछे वह वृद्धावस्था को प्राप्त हुआ शरीर खली के समान ही निस्तेज तथा बिना कीमत का हो जाता है। फिर उसकी कोई इज्जत नहीं करता तथा जिस प्रकार से घाणी खाली हो जाती है, उसी प्रकार से यह चेतन शक्ति जीवात्मा शरीर रूपी घाणी से बाहर निकल जाती है तो यह शरीर भी मृत हो जाता है।

जब यह जीवात्मा हंस इस शरीर से उड़कर बाहर निकलेगा तो शुभ कर्म, परमात्मा की शरणागति रहित होने से उसे कोई पन्थ दिखाने वाला सहारा नहीं मिलेगा तो यह मुक्ति या स्वर्ग के मार्ग को पकड़ नहीं सकेगा और जो नरक या चौरासी लाख योनियों में पहुँचने के मार्ग को पकड़कर वहीं पर ही पहुँच जायेगा। मानव शरीर तथा स्वर्गीय सुख से बहुत दूर चला जायेगा, लौटकर आना अति दुष्कर हो जायेगा।

आगै सुरपति लेखो मांगै, कह जीवड़ा के करण कमाणों।
जीवड़ा नै पाछो सुझण लागो, सुकरत ने पछताणों।

जब यह जीवात्मा इस शरीर से निकलकर के आगे धर्मराज के यहाँ पर पहुँचेगी तो इससे सम्पूर्ण जीवन का हिसाब-किताब पूछा जायेगा कि हे जीव! बताओ तुमने मानव जीवन धारण करके क्या क्या शुभ कर्म किये? तब वहाँ पर कुछ भी जवाब नहीं दे सकेगा और फिर पीछे का जीवन दिखाई देगा क्योंकि उस जीवन में तो ऐसा कोई शुभ कार्य किया नहीं था, जो बता सके। अपने जीवन में सुकृत नहीं होने से फिर पछताना ही पड़ेगा। पछतावे के अतिरिक्त और वहाँ पर कुछ कर भी नहीं सकता।

साभार- **'जम्भसागर'**

इंसान के कर्म से तय होता है भाग्य

एक बार देवर्षि नारद बैकुंठ धाम गए और श्री हरि से कहा- प्रभु! पृथ्वी पर आपका प्रभाव कम हो रहा है। धर्म पर चलने वालों को कोई अच्छा फल नहीं मिला रहा, जो पाप कर रहे हैं, उनका भला हो रहा है। भगवान ने कहा कि कोई ऐसी घटना बताओ। नारद ने कहा- अभी मैं एक जंगल से आ रहा हूँ। वहाँ एक गाय दलदल में फँसी हुई थी। एक चोर उधर से गुजरा। गाय को फंसा हुआ देखकर भी नहीं रूका। वह उस पर पैर रखकर दलदल लांघकर निकल गया। आगे जाकर चोर को सोने की मोहरों से भरी हुई एक थैली मिली। थोड़ी देर बाद वहाँ से एक वृद्ध साधु गुजरा। उसने गाय को दलदल से बाहर निकाल कर बचा लिया। मैंने देखा कि गाय को दलदल से निकालने के बाद वह साधु आगे गया तो एक गड्ढे में गिर गया।

प्रभु, बताइए यह कौन सा न्याय है? नारद की बात सुनने के बाद प्रभु बोले, यह सही ही हुआ। जो चोर गाय पर पैर रखकर भागा था उसकी किस्मत में तो खजाना था, लेकिन उसके इस पाप के कारण उसे केवल कुछ मोहरें ही मिली। वहीं उस साधु को गड्ढे में इसलिए गिरना पड़ा क्योंकि उसके भाग्य में मृत्यु लिखी थी। लेकिन गाय के बचाने के कारण उसके पुण्य बढ़ गए और उसकी मृत्यु एक छोटी-सी चोट में बदल गई।

-शिशपाल लोहमरोड़
मु.पो. रोटू, तह. जायल,
नागौर

संपादकीय

मानव जीवन का लक्ष्य

"आतो काया ले आयो थे, जातो सुको जागो।"

चराचर जगत में मानव ईश्वर की सर्वोत्तम रचना है क्योंकि इस जन्म में उसके पास जीवन का लक्ष्य है, चौरासी लाख योनियो से मुक्त होना। जीवात्मा जब इस पृथ्वी पर जन्म लेती है तो उसके पास एक शरीर होता है जो उसकी पहचान होती है, परन्तु जब वह चिर-निद्रा में जाता है तो उसके कर्म ही उसकी पहचान होती है। जीवन में अच्छे कर्म किए तो उसको सब याद रखेंगे, बुरे कर्म किए तो जीवन निरर्थक हो गया क्योंकि वह अपने परम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त नहीं कर सका।

मनुष्य के पास शरीर के अलावा हृदय भी है। उसे जीवित रहने के लिए भौतिक आवश्यकताओं की आवश्यकता होती है। इन्हें पूरी करने के लिए उसे कर्म करने पड़ते हैं। शरीर के लिए अन्न की जरूरत होती है, बीमार पड़ने पर दवा चाहिए। रहने के लिए घर चाहिए। आने वाली पीढ़ी को भी शिक्षित करना होगा इसके लिए वह धनोपर्जन करता है। वह शरीर को ही सब कुछ समझने लगता है उसके सुख के साधनों में ही लगा रहता है। इन भौतिक इच्छाओं की पूर्ति के लिए उसमें काम-क्रोध, लोभ, मोह आदि विकार आ जाते हैं। वह कुमार्ग पर चलने लगता है। धन के लोभ के लिए चोरी करता है, हत्या करता है और अपने मूल लक्ष्य से भटक जाता है। भौतिक जगत को ही सच मान लेता है ऐसे मनुष्य को मृत्यु के समय सूखा ही जाना पड़ता है उसकी कोई पहचान नहीं होती।

मानव देह को देव-दुर्लभ कहा गया है। चौरासी लाख योनियों में भ्रमण करना पड़ता है। अनेकों कष्ट सहने पड़ते हैं तब यह देह मिलती है। जिन आधारों पर मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणी कहलाता है, उनमें विशेष रूप से अंतःकरण को शुद्ध करना तथा स्वधर्म का पालन करना शामिल है। एक तरह से अन्तःकरण की शुद्धि की नींव स्वधर्म पालन से ही पड़ती है। इसलिए अपने धर्म का पालन करना आवश्यक है। पशु-पक्षी पर दया करो, लोभ मोह का त्याग कर अपनी कमाई का दसवां भाग दान करो, पृथ्वी को हरी-भरी बनाओ, वृक्ष मत काटो। नए पौधों का रोपण और संरक्षण करो, द्विकाल संध्या वंदन करो, मन में ईर्ष्या, द्वेष को स्थान मत दो। सत्य बोलो, जीवों की हत्या मत करो। सात्विक विचार मन में रखकर ओ३म् विष्णु का जप करो। हे प्राणी, आते समय यह जीव शरीर लेकर आया था। परिवार, , कुटुम्ब, माता-पिता सब कुछ इसके पास था। परन्तु जाते समय इस देह को यही छोड़कर जाना पड़ता है। कोई सगे- संबंधी, साधन, दौलत साथ नहीं जाएंगे। हमारा शरीर तो एक साधन है, केवल पाप-पुण्य ही सूक्ष्म रूप में साथ जाते हैं। हे प्राणी, जिसका अन्तःकरण शुद्ध है उसे अड़सठ तीर्थों में जाने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि जिसका हृदय भक्ति भाव व ज्ञान से भरा है उसे केवल शुभ कर्म करने हैं और मुक्ति का मार्ग सुगम करना है। इसलिए अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुए ईश्वर के नाम का सुमिरन कर ताकि जीवन के बाद तुम्हारी मृत्यु सार्थक हो और जीवात्मा को मोक्ष प्राप्त हो जाए।

अजीत सिंह कृत साखी राग सिन्धु खेजड़ली की

पण पालण पिसण गंजण, रूंखां राखण हार।
जोधाणें जालम तप्यो, अजमल जी अवतार।1।
इणि कलि मां अजमल सो, कोई राणो हुवो न राव।
तप मेट्या तुरका तंणा, किया अमर पसाव।2।
वन राखे वेरी गंजे, जालम किया जेर।
पतिसाही उपर तप्यो, थिर थाणों अजमेर।3।
पतशाही रो पेखणों, पिसणां पूरो साल।
प्रतापी पोहमी हुयो, अरि गंजण अजमाल।4।
हाकम मति हरजी हड़ी, देखिज किया दाव।
डाकर कर डंड मांगस्यां, इण विधि करो उपाय।5।
विरचि कहयो बनि बाढ़स्यां, करस्यां वणी विणास।
पण राखो तो पैइसा देवो, दाखे गिरधर दास।6।
भंडारी भ्रमै मति, विन बाद रै वे कांम।
सिर सौंपा रूंखां सटै, म्हे टुकड़ो न देवां दाम।7।
दाग लगे जे दांम दां, पंथ मां पूणां होय।
पण राखां पांणी चढ़े, कलंक न लागे कोय।8।
चालै चाल वणी केरी, तसकर घाल्यो तांण।
साख पड़ी सिर सूंपस्यां, पहला किसा बखाण।9।
सतरा सौ सतयासियो, दसमी मंगलवार।
भादव सूदी साधु खड़या, खरतर खांडा धार।10।
कुण पोहमी पण मेटसी, धरम सटे कुण धीज।
वन राख्यो विश्नोइयां, राठोड़ां री रीज।11।

भावार्थ- इस साखी में कवि सर्वप्रथम अजीत सिंह जोधपुर नरेश की महिमा का बखान करते हैं। क्योंकि खेजड़ली में वृक्ष कटाने वाले अभयसिंह के पिता थे। कहां तो महिमावान अजीत सिंह और कहां वृक्ष कटाने वाले पुत्र अभयसिंह, इन दोनों की बराबरी कहां हो सकती है।

प्रण की रक्षा करने वाले, दुष्टों का नाश करने वाले तथा वृक्षों की रक्षा करने वाले जोधपुर नरेश अजीतसिंह ने बड़ी न्यायप्रियता से राज्य किया था।1। इस कलयुग में अजीत जैसा न तो कोई राजा हुआ न ही कोई अन्य राव ही हुआ है। जिन्होनें तुरकों की ताकत को तहस-नहस कर दिया और अपने राज्य का विस्तार किया।2। वनों की रक्षा करते तथा दुष्ट राजाओं का नाश करते। महावीर अजीतसिंह ने अनेकों अपराधियों

को मिटा दिया। अजमेर के बादशाह ऊपर चढ़ाई करके अपने अधीन कर लिया था तथा न्याय युक्त राज्य की स्थापना की थी।3। जो बादशाह जोधपुर की तरफ बुरी नजरों से देखा करते थे उन्हें पीस डाला तथा उनके लिये शूल की तरह चुभा करते थे। ऐसे प्रतापी इस धरती पर अजीत राजा हुए, जिन्होंने धर्म, न्याय एवं प्रजापालन के लिये दुष्टों का नाश किया।4। उन्हीं अजीत के पुत्र अभय सिंह अपने पिता की राजगद्दी पर विराजमान हुए। राज्य का प्रमुख मन्त्री गिरधरदास था, जैसा गिरधरदास चाहता था वैसा ही होता था। एक दिन हाकिम गिरधर दास ने राजा की मति का हरण कर लिया और कहा कि बिश्नोई सम्पन्न लोग है उनसे कर के रूप में रुपये मांगने चाहिये। यहां पर राज कोष में धन का अभाव चल रहा है और बिश्नोइयों के पास अपार धन है। जैसा मैं कहता हूं वैसा ही उपाय करो।5। राजाज्ञा लेकर गिरधर दास खेजड़ली गांव पहुंचा और बिश्नोइयों से कहने लगा- आप लोग राज-काज के लिये धन दें, अन्यथा हम यहां वृक्ष काटेंगे और धन एकत्रित करेंगे। यदि वृक्ष न काटने देने की प्रतिज्ञा है तो रुपये दो। इस प्रकार से गिरधरदास कहने लगा।6। बिश्नोइयों ने कहा- रे भण्डारी! भ्रम में नहीं रहना। व्यर्थ का विवाद नहीं करना। वृक्षों के बदले सिर दे देंगे किन्तु कटने नहीं देंगे तथा रुपयों के नाम पर एक टुकड़ा, एक पैसा भी नहीं देंगे, यही हमारा प्रण है। आपको धन भी क्यों और किसलिए दिया जाये, इसका परिणाम भी क्या होगा।7। यदि हम अधर्म के लिये अपनी कमाई दे देंगे तो हमारे ऊपर कलंक लग जायेगा तथा हम पंथ में नीच समझे जायेंगे। यदि हम प्रण की रक्षा करते हैं तो हमारा धर्म बचेगा और किसी प्रकार का कलंक नहीं लगेगा।8। गिरधरदास कहने लगा कि मैं अभी चला वन काटने के लिये यदि रोकना है तो रोकिये। ऐसा कहता हुआ तस्कर की भांति वन में प्रवेश होने को उद्धत हुआ। बिश्नोइयों ने कहा जब जरूरत पड़ेगी तो अपना सिर वृक्षों के अर्पण कर देंगे किन्तु वृक्ष नहीं कटने देंगे। पहले बड़ाई करने से क्या होता है।9। इस प्रकार से संवत् 1787 में दसवीं तिथि मंगलवार के दिन तथा भादवा शुक्ल पक्ष में 363 स्त्री-पुरुषों ने बलिदान दिया।10। इस घटना का आगे साखी में विस्तार से वर्णन किया गया है। ऐसा कौन बादशाह धरती पर पैदा हुआ जो बिश्नोइयों के प्रण को मिटाकर धर्म के विमुख कर देगा। इस प्रकार से बिश्नोइयों ने वन की रक्षा की। राठौड़ राजाओं के कोप के भाजन होते हुए भी अपने धर्म की रक्षा की थी।11।

(क्रमशः)

साभार- **साखी भावार्थ प्रकाश**

म्हारे मेहर है जाम्भोजी री

म्हारे मेहर है जाम्भोजी री,
हूं जाम्भाणी मायत जाई।
रुप गहणो दियो है गुरुजी,
इण अनूठे पंथ र माही॥
करमा गौरा री पंथज हूं,
खिंया नेतू अम्रता महतारी।
हूं निवण निरमल सतपंथी,
मोटा बुचाजी री पथ पुजारी॥
घंमड रति भर करूं नहीं,
धन जोबन अर काया रो।
गर्व है इण उजले पंथ रो,
है जाम्भोजी री माया रो॥
सिर कटादा रुंख सारु मैं,
पल में जीव जगत कारणे।
कृपा घणी सतगुरु जी री,
म्हारे हिरण विचरे बारणे॥
निवण करूं जाम्भोजी नै,
धर्म पालण मत विसरायो।
पंथ विश्नोई उजलौ राखो,
म्हानै पंथ लिगार चलायो॥

-प्रेमसिंह बिश्नोई सौऊ
श्री वील्होजी निज धाम,
रामड़ावास कलां, जोधपुर

गुरु जाम्भोजी द्वारा वर्णित यज्ञ ही कोरोना मुक्ति का सरल उपाय

आज जब सारा विश्व कोरोना जैसी महामारी से ग्रसित है, ऐसे समय में बिश्नोई धर्म के प्रवर्तक गुरु जाम्भोजी का बताया हवन ही हमें इस संकट से बचा सकता है। गुरु जाम्भोजी के बनाए 29 धर्म नियमों का नित्य पालन करने वाला व्यक्ति स्वयं में इतना मनोबल से युक्त हो जाता है कि कोई दोष उसे प्रभावित ही नहीं कर सकता चाहे शारीरिक हो या मानसिक।

जाम्भोजी द्वारा बताये गये उनत्तीस नियमों का यदि सूक्ष्मता से अवलोकन किया जाये तो यह बात पूर्ण रूप से स्पष्ट हो जायेगी कि उन्होंने पर्यावरण को कितने व्यापक रूप में ग्रहण किया था और उसी को ध्यान में रखकर उन्होंने इन उनत्तीस नियमों के पालन की बात कही थी। इन नियमों में कई नियम शारीरिक शुद्धि से सम्बन्धित है। उनत्तीस नियमों में दोनों समय संध्या वंदना करना, संध्या को आरती गाना, अमावस्या को व्रत रखना और विष्णु का भजन करना आदि नियम आत्मिक पर्यावरण को शुद्ध रखने के उद्देश्य से ही बताये हैं।

द्विकाल सन्ध्या करो, सांझ आरती गुण गावौ।

जाम्भोजी ने सबदवाणी में इस बाह्य पर्यावरण के महत्व को प्रतिपादित किया है और उनत्तीस नियमों में 'होम हित चित प्रीत सूं होय' की बात कहकर बाह्य पर्यावरण को शुद्ध रखने के उपाय की ओर संकेत किया है। सम्पूर्ण विश्व में सृजन निर्माण और विकास की जो अविरल धारा बह रही है तथा मन, प्राण और भूत का जो निरन्तर संयोग-वियोग हो रहा है यही यज्ञ है। यज्ञ मानव शरीर में जीवित रहने और श्वांस लेने की क्रिया भी है। ये यज्ञ मनुष्य और प्रकृति के बीच सेतु बनाते हैं। इनके माध्यम से मनुष्य प्रकृति से सम्बन्ध जोड़ता है और उसकी शक्तियों का उपयोग करने की क्षमता प्राप्त करता है। ऐसी मान्यता है कि अग्नि, इन्द्र और सूर्य के आह्वान द्वारा मनुष्य इन तीनों लोकों को जीत लेता है। भौतिक यज्ञ करने से मनुष्य विश्व की शक्तियों का आह्वान कर उन्हें अपने में धारण करता है। प्रत्येक मनुष्य को प्रतिदिन पंच महायज्ञ- देवयज्ञ, भूतयज्ञ, पितृयज्ञ, ब्रह्मयज्ञ और अतिथियज्ञ करने अनिवार्य बताये गये हैं। इन पाँचों यज्ञों में से देवयज्ञ के विषय में मनुस्मृति में कहा गया है कि प्रकृति को नियन्त्रित करने वाले देवताओं, जो अपनी शक्तियों द्वारा विभिन्न रूपों सूर्य, चन्द्र, अग्नि, जल, इन्द्र वरुण आदि में जगत का कल्याण कर रहे हैं, उन्हें होम द्वारा प्रसन्न करना चाहिए। इसके अतिरिक्त गुरु महाराज ने अपने शिष्यों को होम की जोत में अपने नित्य दर्शन देने का भी वचन दिया है।

वेद मन्त्रों से यज्ञ में दी गई घृत व द्रव्यों की आहुति वस्तुओं द्वारा सूक्ष्म रूप में सूर्यादि देवताओं के पास जाती है, जिससे वातावरण शुद्ध होकर मानव का कल्याण होता है। यज्ञ का देवता अग्नि शक्ति का प्रतीक है, शक्ति रहित संसार जड़ है। श्री जम्भेश्वर भगवान द्वारा होम के साथ हित, चित्त और प्रीत शब्दों का जुड़ाव अति सार्थक और सारगर्भित है। होम के साथ हित यानी लोक कल्याण की भावना प्रमुख है। चित्त यानी यज्ञ की आहुति मनोयोगपूर्वक देना ही सार्थक है। प्रीत शब्द प्रकृति एवं शेष जगत् के साथ गहरे लगाव का प्रतिपादक है। अच्छी संगति के लाभ एवं बुरी संगति के दुष्परिणामों के वर्णन के द्वारा भी जाम्भोजी ने बाह्य पर्यावरण के महत्व को प्रकट किया है जैसे-

लौहे हुंता कंचंण घड़िया, घड़िया ठांव सुठाउं।

गुरु महाराज ने यज्ञ का महत्व बताते हुए अपने शिष्यों को होम की जोत में अपने नित्य दर्शन देने का भी वचन दिया है-

हित चित्त प्रीत सूं होय, बास बैकुण्ठे पावो।

वायु शुद्धिकरण के लिए यज्ञ का अत्यन्त महत्व है। अथर्ववेद में समस्त ब्रह्माण्ड को बाँधने वाला नाभिस्थल यज्ञ को बताया गया है।

यज्ञो विश्वस्य भुवनस्य नाभिः।[1]

मनुस्मृति में कहा गया है कि यज्ञ में डाली गई वस्तुएँ आहुति द्वारा धुएँ के माध्यम से सूर्य तक पहुँचती हैं। सूर्य से वर्षा होती है, वर्षा से अन्न होता है जिससे प्रजा की रक्षा होती है।

अग्नौ प्रास्ताहुतिः सम्यगादित्यमुपतिष्ठते।[2]
आदित्याज्जायते वृष्टिर्वृष्टेरन्नं ततः प्रजाः॥

अथर्ववेद में पर्यावरण की दृष्टि से प्रातः सायं यज्ञ का विधान किया गया है।

अग्निहोत्रं सांय प्रातगृहाणां निष्कृतिः।[3]

ंसायं गृहपतिर्नो अग्निः प्रातः प्रातः सौमनस्यदाता।

यज्ञ बिना हविद्रव्यों के सम्पन्न नहीं होता। यज्ञ की प्रधान हवि है घृत। यजुर्वेद में कहा गया है कि समिधाओं से यज्ञाग्नि को प्रज्ज्वलित करो पुनः उस अतिथि रूप अग्नि को घृत से प्रबुद्ध करो और प्रदीप्त अग्नि में उत्तमोत्तम हवि की आहुतियाँ प्रदान करो।[4]

मंत्र में चार प्रकार की हविद्रव्यों का संकेत है-

1. सुगन्धियुक्त 2. पुष्टिवर्धक 3. रोगनाशक 4. मिष्ट

इन चार प्रकार के द्रव्यों का नाम उल्लेख महर्षि दयानन्द ने संस्कार विधि में निम्न प्रकार किया है-

प्रथम सुगन्धित होमद्रव्य- कस्तूरी, केसर, अगर, वेत, चन्दन, इलायची, जायफल, सावित्री आदि।

द्वितीय पुष्टिकारक- घृत, दूध, फल, कंद, अन्न, चावल, गेहूँ आदि।

तृतीय रोगनाशक- सोमलता तथा गिलोय आदि औषधियाँ।

चतुर्थ मिष्ट- शक्कर, शहद, छुआरे, दाख आदि।

यथावसर जिस प्रकार के आहुतिद्रव्यों की आवश्यकता हो तब उसी प्रकार के द्रव्यों को आहुति के लिए प्रयोग करने से व्यक्ति विशेष व बाह्य वातावरण को लाभान्वित किया जा सकता है। यज्ञाग्नि के लिए जो समिधाएँ प्रयोग की जाती है वे पर्यावरण की दृष्टि से नियत-नियत वृक्षों से लाई जाती हैं जैसे पलाश, शमी, बड़, पीपल, गूगल, आम, बिल्व आदि। अथर्ववेद में कहा गया है कि जिस मनुष्य को गूगल औषध का उत्तम गन्ध प्राप्त होता है उसे रोग पीड़ित नहीं करते और आक्रोश उसे नहीं घेरता।

न तं यक्ष्मा अरुन्धते नैनं शपथो अश्नुते।[5]

यं भेषजस्य गुल्गुलोः सुरभिर्गन्धो अश्नुते॥

प्राचीनकाल में महामारी फैलने पर बड़े-बड़े यज्ञ किये जाते थे, जिन्हें चातुर्मास्य या भैषज्य यज्ञ कहते हैं। वे रोगों को दूर करने के लिए होते हैं।[6] यज्ञ से निकले हुए धुएँ का विश्लेषण करने पर पाया गया कि जलती हुई शक्कर में वायु शुद्ध करने की क्षमता पाई जाती है तथा इसके धुँए में क्षय, चेचक व हैजा आदि बीमारियों के कीटाणु नष्ट करने की शक्ति है। घी व चावल में केसर मिलाकर अग्नि में आहुति देने से रोग कीट मर जाते हैं। धुएँ का कड़वापन समाप्त करने के लिए अगर का प्रयोग किया जाता है।[7]

वैदिक ऋषि पर्यावरण के सभी घटकों के प्रति सतत् जागरुक व सतर्क नहीं अपितु सुरक्षा एवं वृद्धि के प्रति भी सचेत और सावधान थे। शुद्ध वायु जीवन के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। शुद्ध वायु बल प्रदान करती है तो दूषित वायु उसे दूर फेंकती है। वायु में कई प्रकार की गैस होती हैं जिनके अलग-अलग गुण एवं अवगुण हैं प्राणवायु अर्थात् आक्सीजन जीवन के लिए आवश्यक है।

यदैदा वात ते गृहेकमृतस्य निधिर्हितः।[8]

ततो नो धेहि जीवसे॥

अर्थात् इस वायु के गृह में जो अमरत्व की धरोहर निहित है। वह हमारे जीवन के लिए आवश्यक है। शुद्ध वायु कई रोगों के लिए औषधि का काम करती है। तपेदिक जैसे भयंकर रोगों के लिए रामबाण है। आज हमारा वायुमण्डल पूर्णरूप से दूषित हो चुका है। परमाणु बमों के बार-बार किये गये परीक्षणों से, कल कारखानों के विषाक्त धुएँ से, पेट्रोल-डीजल आदि से समस्त वायुमण्डल इतना अधिक दूषित हो रहा है कि आज दमा, खाँसी, श्वाँस रोग, हृदयरोगादि रोगियों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है।

वैदिक ऋषि किसी भी प्रकार के प्रदूषण को स्वीकार नहीं करते। वायुमण्डल को शुद्ध रखने के लिए उन्होने यज्ञ विधान किया। यज्ञीय धुँए व सुगन्धित आहुति द्रव्यों से सम्पूर्ण वातावरण और वायुमण्डल प्रदूषण रहित हो जाता हैं।

त्वं नो वायवेषामपूर्व्यः सोमानां प्रथमः पीतिमर्हसि।[9]

पर्यावरण में वायु का सन्तुलित, शुद्ध व सुखप्रद रहना आवश्यक है क्योंकि वायु जहाँ जीवनदायिनी है वहीं इसका प्रचण्ड आवेग आँधी के रूप में विनाशकारी बन जाता है। इसीलिए वैदिक ऋषि वायु देव को हवि से प्रसन्न करने की बात कहते हैं-

आत्मा देवानां भुवनस्य गर्भो यथावशं चरति देव एषः।[10]

घोषा इदस्य श्रृण्विरे न रुपं तस्मै वाताय हविषा विधेम॥

एक अन्य मंत्र में कल्याणकारी वायु हमारे हृदय के लिए औषधि बनकर आये व हमारी आयु को बढ़ाये, यह प्रार्थना की गई है।

वात आ वातु भेषजं शंभु मयोभु नो हृदे।[11]
प्र ण आयूंषि तारिषत॥

इस मंत्र में वायु को हृदय रोग दूर करने वाला बताया गया है। शुद्ध ताजी वायु अमूल्य औषधि हमारे हृदय के लिए दवा के समान उपयोगी है। प्राणायाम या श्वांस के अनुलोम प्रतिलोम द्वारा शुद्ध वायु फेफड़ों में पहुँचकर समस्त रोगों को दूर करती है।

आज इस कोरोना महामारी में भी श्वांस और फेफड़ों के क्षतिग्रस्त होने से ही मनुष्य पीड़ित है। यज्ञ द्वारा शुद्ध वायु ही इस भयंकर रोग से बचाव कर सकती है।

स्वास्थ्य के लिए यज्ञ किस प्रकार अमृतोपम है निम्न प्रकार देखते हैं-

यज्ञ से विचारों का शोधन- यज्ञ से सुरभित वैदिक मन्त्रों की मधुर ध्वनि से पवित्र वातावरण में सद्विचारों का स्वतः उच्छलन होता है। जिस प्रकार यज्ञाग्नि में सुगन्धित पदार्थों का होम करने से वायुमण्डल शुद्ध होता है, उसी प्रकार विचार भी शुद्ध होते हैं। महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित यज्ञ पद्धति में सर्वप्रथम ईश्वर-स्तुति-प्रार्थनोपासना मन्त्रों में 'विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आसुव' इस मन्त्र में दुर्गुण, दुर्व्यसनों को दूर करने और जो कल्याणकारक गुण कर्म स्वभाव हैं, उन्हें प्राप्त करने की प्रार्थना की गई है। यज्ञ से दूषित विचार दूर होते हैं और कल्याणकारी विचार चहुं ओर से प्राप्त होते हैं। यज्ञ से 'तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु;[12] की प्रार्थना साकार होने लगती है। यज्ञकर्ता का मन सदैव कल्याणकारी संकल्प से परिपूर्ण रहता है और चित्त स्वस्थ होता है।

वायु का औषधीकरण- ऋग्वेद में प्रार्थना की गई है 'वात आवतु भेषजम्'[13] अर्थात् औषधयुक्त वायु चारों ओर प्रवाहित हो। वायु को औषधियुक्त और भेषज युक्त बनाने का सबसे सुगम एवं सशक्त मार्ग है- यज्ञ। यज्ञाग्नि में सुगन्धित, औषधरूप द्रव्यों की हवि प्रदान करने से निकलने वाले सूक्ष्म धूम्र परमाणु प्रदूषित कार्बन परमाणुओं में प्रवेश कर उन्हे शुद्ध तत्वरूप में परिवर्तित कर देते हैं। यज्ञीय धूम्र में वायु के विषैले तत्वों को नष्ट करने की विलक्षण क्षमता है। अथर्ववेद में कहा है- 'वायु अन्तरिक्षस्याधिपतिः'।[14] यज्ञ से वायु शुद्ध होकर औषधि रूप हो जाती है। यज्ञ की सुरभि से परिपूर्ण वायु नासिका रन्ध्रो से प्रवेश करके वक्षस्थल में फेफड़ों में प्रवेश करती है तो अन्दर के छोटे-छोटे वायु कोषों में यज्ञमयी वायु के भर जाने पर अन्दर का अशुद्ध भाग शुद्ध हो जाता है।

यज्ञ से रोग-प्रतिरोधक क्षमता की प्राप्ति- ऋषियों ने कल्याणकारी व विषनाशक गोघृत का प्रयोग यज्ञ में करना जहाँ अति हितकर बताया है[15], वहीं रोगनाशक पदार्थों की आहुति का निर्देश दिया है, जो बहुत लाभकारी होता है। यज्ञ में यदि रोगनिवारक पदार्थों की हवि दी जा रही है तो उस यज्ञ से जुड़े व्यक्तियों को रोग प्रतिरोधक शक्ति प्राप्त हो जाती है। जिससे उन पर रोग आसानी से आक्रमण नहीं कर सकते। यज्ञकर्ताओं की दिनचर्या नियमित होती है। वे समय पर जागते व सोते हैं, इससे भी स्वास्थ्य की रक्षा होती है।

यज्ञ से चिकित्सा- प्रतिदिन यज्ञ द्वारा वायु, जल, ध्वनि पृथ्वी आदि के प्रदूषण निवारण के साथ-साथ मन्त्रोक्त मधुर अमृतोपदेशों से मन, बुद्धि, चित्त आदि के दोषों को दूर कर देने पर मानव स्वस्थ जीवन प्राप्त करता ही है। दुर्भाग्य से कभी कोई रोग आक्रमण कर भी देता है तो उसकी चिकित्सा भी यज्ञ द्वारा जितनी प्रभावी और सरल रुप से सम्भव है वैसी अन्य किसी चिकित्सा पद्धति द्वारा नही हो सकती। यजुर्वेद में जहाँ सैकड़ों कामनाओं की पूर्ति यज्ञ द्वारा वाच्छित है, वहाँ- 'अयक्ष्म च मे, अनामयच्च मे, जीवातु च मे, दीर्घायुत्व च मे, यज्ञेन कल्पताम्'[16] के द्वारा प्रार्थना की गई है कि यज्ञ से मेरे यक्ष्मादि रोग दूर हों।
अथर्ववेद में कहा गया है-

'मुञ्चामि त्वा हविषा जीवनायकमज्ञातयक्ष्मादुत राजयक्ष्मात्'[17]

अर्थात् मैं तुझ रोगी को जीवन प्रदान करने के लिए ज्ञात और अज्ञात बड़े राजयक्ष्मादि रोगों को यज्ञ में हवि प्रदान कर रोगमुक्त करता हूँ। इसका अभिप्राय यह है कि प्रकट या अप्रकट तथा सूक्ष्मातिसूक्ष्म रोगों से मुक्ति प्रदान करने का प्रबलतम साधन यज्ञ है। अग्नि में कृमिनाशक औषधियों की आहूति देकर इन रोगकृमियों को नष्ट कर यज्ञ द्वारा रोगों से बचा जा सकता है। अथर्ववेद में मन्त्र कहते हैं कि अग्नि में

हवि रोगकृमियों को उसी प्रकार दूर बहा ले जाती है, जिस प्रकार पानी झाग को।

'इदं हविर्यावुधानान् नदीफेनमिवावहत्।'[18]

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि ऐसे आपातकाल में जब सारा विश्व कोरोना जैसी महामारी से ग्रसित है, हमें बिश्नोई धर्म के उनतीस नियमों व गुरु जाम्भोजी के बताये यज्ञ का नित्य प्रति पालन व विश्व में प्रचार कर विश्व को संरक्षित करना चाहिए। यही हमारा धर्म है, यही हमारा कर्तव्य है और यही हमारे बिश्नोई धर्म व गुरुजी के बताये उपदेशों की सार्थकता है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुख भाग भवेत्॥

सन्दर्भः

1. ऋग्वेद 10/168/4
2. मनुस्मृति 3/76
3. अथर्ववेद 19/38/1
4. यजुर्वेद 12/30
5. अथर्ववेद 19/38/1
6. गोपथ ब्राह्मण
7. भारतीय संस्कृति व पर्यावरण संरक्षण पृ. 79 डॉ. बी. बी.एस. कपूर
8. ऋग्वेद 10/186/3
9. ऋग्वेद 1/134/6
10. ऋग्वेद 10/168/4
11. ऋग्वेद 10/186/11
12. यजुर्वेद
13. ऋग्वेद 10/186/1
14. अथर्ववे 5/24/8
15. अथर्ववेद 6/32/1
16. यजुर्वेद 18/16
17. अथर्ववेद 3/11/1
18. अथर्ववेद 1/2/31, 1/12/32, 1/14/37, 1/15/23, 29

-डॉ. वीना बिश्नोई, प्रोफेसर,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
मो.: 7351666621

सब मिलकर एक दीपक जलाएँ

आओ सब मिलकर
एक दीपक जलाएँ,
घना अंधकार है
चहुँ ओर,
देश पर छाए इस
अंधकार के बदरा को
हमारे मजबूत इरादों, संकल्प
से दूर भगाएं
आओ सब मिलकर
एक दीपक जलाये.....
एक दीपक जलाये.....
जब देश के कोने कोने में हर कोई
दीप जलाएगा तो फिर
ये घना अंधेरा भी
कहाँ छुप पायेगा।

इसी दीपक की ज्योति में
आओ सब मिलकर इसी
अखंड एकता के परिचायक बने,
मातृभूमि की रक्षा खातिर
हम सब यूँ ही डटे रहे,
सदियों से चले हमारे
भारत गौरव की पताका को
विश्व पटल पर लहराते रहे,
आओ सब मिलकर
इसी आशा की अलख
हर किसी के मन मे जगाएं
एक दीपक जलाएं
एक दीपक जलाएं॥

-नेहा बिश्नोई
वरि. अध्यापक , जोरावरपूरा हनुमानगढ़

गुरु जंभेश्वर भगवान द्वारा प्रतिपादित बिश्नोई धर्म नियम कोरोना काल में अत्यंत उपयोगी

बिश्नोई धर्म पंथ के प्रवर्तक श्री गुरु जंभेश्वर भगवान द्वारा प्रतिपादित 29 नियम कोरोना वायरस के संक्रमण से बचाव व इसे बढ़ने से रोकने के लिए अत्यंत कारगर है; जैसे–

1. **तीस दिनों का सूतक:** गुरु जंभेश्वर भगवान द्वारा बनाया गया पहला नियम है– 30 दिनों का सूतक। अर्थात् जब बालक का जन्म होता है तो प्रसूता स्त्री और बच्चे को 30 दिनों तक एक ही कमरे में सेल्फ क्वॉरेंटाइन करके लॉकडाउन का पालन करना होता है। नवजात शिशु के शारीरिक मानसिक और बौद्धिक विकास की नींव यहीं से पड़ती है। इसलिए मां और बच्चे दोनों को 30 दिनों तक एक अलग कमरे में रखा जाता है और केवल एक ही औरत उनकी देखभाल के लिए अंदर आ जा सकती है। ऐसा करने से जच्चा व बच्चा दोनों किसी भी वायरस के संक्रमण से बचे रहते हैं। दोनों के कपड़े, बर्तन इत्यादि सब साफ व अलग रखे जाते हैं। जच्चा व बच्चा की देखभाल करने वाली औरत भी अपनी साफ–सफाई का पूरा ध्यान रखती है। तीस दिनों तक दूसरा कोई भी पुरुष या महिला जच्चा–बच्चा के पास नहीं जाता। तीस दिनों का सूतक पूरा होने के बाद बच्चे का सिर मुंडन करवा कर मां व बालक को नहला के साफ कपड़े पहनाकर पावन पवित्र अग्नि के सामने अभिमंत्रित जल की बूंदें पिला कर शुद्ध कर दिया जाता है। इस प्रकार बच्चे के जीवन की प्रारंभिक अवस्था से ही सेल्फ क्वॉरेंटीन का नियम बनाया गया।

2. **पांच दिन ऋतुवंती काल:** जब भी युवावस्था में प्रवेश करने के बाद युवती को मासिक धर्म आना शुरू हो जाता है तो 5 दिनों तक वह लगभग सेल्फ कवॉरेंटीन रहती है और किसी भी गृह कार्य में भाग नहीं लेती। विशेषकर रसोई का काम तो बिल्कुल भी नहीं करती। इस नियम से भी साफ सफाई रहती है और घर में विशेषकर भोजन में संक्रमण नहीं फैलता।

3. **नित्यप्रति सुबह स्नान करना:** तीसरा नियम है प्रतिदिन सुबह सवेरे स्नान करके स्वच्छ वस्त्र पहनना। इस नियम से भी इंसान का शरीर शुद्ध रहता है और संक्रमण से बीमार होने का खतरा नहीं रहता। शरीर की साफ–सफाई का यह नियम वायरस को फैलने से रोकता है।

4. **शील धर्म का पालन करना:** चौथा नियम है शील धर्म का पालन करना अर्थात् इंसान का चरित्रवान होना। मनुष्य के चरित्रवान होने से पति व पत्नी दोनों पतिव्रता व पत्नीव्रता धर्म का पालन करते हैं जिससे बहुत सी संक्रमित वायरल बीमारियों से बचाव होता है।

5. **संतोष धारण करना:** यह नियम भी वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बहुत ही कारगर है। लॉकडाउन के समय लोग अपने–अपने घरों में कैद हैं। कोई कारोबार भी नहीं कर सकते। पैसा कमाना, मनोरंजन के लिए भ्रमण करना, विवाह इत्यादि समारोह में अत्यधिक खर्चा व दिखावा करना सब कुछ बंद है। ऐसे में इंसान मानसिक तनाव में आ सकता है। परंतु गुरु जंभेश्वर भगवान द्वारा बनाए गए संतोष धारण करने से व्यक्ति अपने घर में रहकर जितना भी उसके पास उपलब्ध है उसी से गुजारा कर सकता है। संतोष धारण करने से व्यक्ति के मन में सकारात्मक विचार आते हैं और संतोष धारण न करने से नकारात्मक विचार आते हैं। नकारात्मक विचार तब आते हैं जब व्यक्ति उससे

ज्यादा चाहता है जितना उसके पास है। यह नकारात्मकता लॉकडाउन में घातक है जिससे लॉकडाउन का पालन होने में कठिनाई होती है। यदि घर में केवल आटा-दाल है तो भी व्यक्ति संतोष धारण करके लॉकडाउन का समय बिना परेशानी व्यतीत कर सकता है और संक्रमण से बच सकता है।

6. शुचि का पालन करना: शुचि का अर्थ है बाह्य तथा आंतरिक पवित्रता। बाह्य पवित्रता जैसे हाथ-मुंह धोना, स्नान करना, साफ कपड़े पहनना, सफाई रखना इत्यादि नियमों के पालन से संक्रमण नहीं होता और आंतरिक पवित्रता रखने के लिए अपनी बुद्धि निर्मल रखना, अच्छे विचार रखना, ईश्वर का स्मरण करना प्रार्थना करना इत्यादि से मन को शांति मिलती है और रोग से लड़ने की मानसिक शक्ति प्राप्त होती है।

7. नित्य प्रति हवन करना: गुरु जंभेश्वर भगवान ने नित्य प्रति हवन करने का नियम बनाया। शुद्ध देसी घी से गाय का सूखा उपला जलाकर हवन सामग्री व शुद्ध घी से हवन करने से घर के वातावरण के हानिकारक कीटाणु, जीवाणु व वायरस समाप्त होते हैं। वातावरण शुद्ध होता है जिससे संक्रमण को रोकने में सहायता मिलती है। मन, बुद्धि और वातावरण की पवित्रता के लिए नित्य प्रति हवन करने का नियम बहुत ही अच्छा है। पवित्रता ही संक्रमण से बचाव का उपाय है।

8. पानी, ईंधन व दूध को छानबीन कर प्रयोग करना: यह नियम भी शुद्धता के लिए आवश्यक है। चाहे आजकल वाटर प्यूरीफायर का पानी पीते हैं फिर भी जिस गिलास में पीते हैं वह बिल्कुल साफ होनी चाहिए और पानी पीने से पहले एक बार नजर जरूर डालनी चाहिए कि कहीं इसमें कोई गंदगी तो नहीं। ऐसा करने से संक्रमण से बचाव होता है और बीमारी भी टलती है। ईंधन को छानबीन कर प्रयोग में लाने से भी शुद्धता रहती है और संक्रमण नहीं फैलता। कई गांवों में आज भी कई जगह चूल्हे पर रोटी बनती है जिसमें लकड़ी का प्रयोग होता है। इसलिए चूल्हे में प्रयोग होने वाली लकड़ी को जलाने से पहले यह देख लेना चाहिए कि इसमें कोई जीव या कीड़े-मकोड़े तो नहीं। यदि लकड़ी के साथ जीव या कीड़े-मकोड़े जलते हैं तो उस में रखकर पकाया हुआ भोजन या सेंकी हुई रोटी दूषित हो सकती है। ऐसा करने से खाने की शुद्धता नहीं रहेगी तो बीमारी और संक्रमण फैलने का खतरा रहता है। गैस चूल्हा जलाते समय या किसी और काम के लिए अग्नि जलाते समय भी यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि उस अग्नि के साथ, आस-पास या अग्नि के लिए प्रयोग किए जाने वाले इंधन में कोई जीव तो नहीं। दूध को छानकर प्रयोग में लाने का अर्थ है दूध को पीने या प्रयोग में लाने से पहले यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उसमें कोई जीव या बैक्टीरिया तो नहीं। इसलिए दूध को प्रयोग में लाने से पहले उसको बैक्टीरिया मुक्त कर लेना चाहिए।

9. वाणी छानना अर्थात् सोच समझकर अच्छी भाषा बोलना: लॉकडाउन के दौरान लोग अपने-अपने घरों में कैद हैं और घर के सभी सदस्य एक साथ रह रहे हैं। इसलिए बात-बात पर मनमुटाव व झगड़ा होने का खतरा बना रहता है इसलिए वाणी छानबीन कर बोलना अर्थात् मुंह से कोई ऐसा शब्द नहीं निकालना जिससे झगड़ा होने का खतरा रहे। यदि वाणी पर नियंत्रण नहीं रहा तो झगड़ा होने का खतरा रहेगा और घर के लोग आपस में लड़ेंगे। खासतौर से पति-पत्नी के बीच झगड़े के कई मामले आये हैं। वाणी सोच समझ कर न बोलने का नतीजा यह होगा कि घर से बाहर निकल कर थाना तहसील में जाना पड़ेगा और ऐसा करने से संक्रमण की चपेट में आएंगे।

10. क्षमा, दया धारण करना: क्षमा, दया धारण करने का नियम भी झगड़े-फसाद को रोकता है व एक दूसरे पर दया करना भी आपसी सहयोग की खातिर आवश्यक है। कोरोना वायरस के समय में भी यह

नियम बहुत सार्थक है क्योंकि कोरोना योद्धाओं जैसे डॉक्टर नर्स पुलिस इत्यादि के विरोध स्वरूप उनको पहुंची शारीरिक चोट की वजह से यदि उन कोरोना योद्धाओं में उनको चोट पहुंचाने वालों की प्रति क्षमा का भाव न होता तो वे अपने कर्तव्य से पीछे हट जाते और यह महामारी बेकाबू हो जाती। इसी प्रकार बेसहारा लोगों जैसे मजदूर इत्यादि पर कई लोगों व संस्थाओं द्वारा दया भाव दिखाने के कारण बहुत सी संस्थाओं ने उन्हें खाना व दवाई पहुंचाई है जिससे उनको बहुत सहायता मिली है और काफी हद तक पलायन रुकने से संक्रमण रुका है।

11. झूठ नहीं बोलना: झूठ बोलकर सोशल मीडिया के जरिए अफवाह फैलाना इस संक्रमण के समय में खतरनाक साबित हो सकता है। जैसे यदि किसी ने झूठ बोलकर अफवाह फैला दी कि फलां तारीख से लॉकडाउन खुल जाएगा, दुकानें, बसें मेट्रो व रेल यातायात खुल जाएगा तो लोगों की भीड़ जमा हो सकती है जो व्यापक स्तर पर संक्रमण का कारण बन सकती है।

12. अमावस्या का व्रत रखना: महीने में एक बार अमावस के दिन व्रत रखने से भी पाचन क्रिया के अंगों को विश्राम मिलता है जिससे स्वास्थ्य ठीक रहता है। ज्यादा भोजन करने से मोटापा बढ़ सकता है और मोटापा कई बीमारियों का कारण बन सकता है । एक दिन के भोजन की बचत भी होती है। स्वास्थ्य ठीक रहेगा तो व्यक्ति की रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ेगी जो कोरोना संकट से लड़ने में काम आएगी।

13. विष्णु का भजन करना: संकट के समय में जब लोग घरों में कैद हैं तो मानसिक तनाव, डिप्रेशन आदि बीमारियों के शिकार हो सकते हैं। इनसे बचने का उपाय है ईश्वर के, विष्णु के भजन करना ताकि ईश्वर में आस्था बढ़ने के कारण इस संकट की परिस्थिति का सामना किया जा सके।

14. जीव दया पालनी: कोरोना की वैश्विक महामारी से लड़ने व इस संक्रमण पर काबू पाने के लिए यह आवश्यक है कि इंसान जीवों पर दया करें उनकी हत्या न करें और यथा समय उनके प्राण बचाने की कोशिश करें। जैसे कई लोगों व संस्थाओं ने कोरोना संकट के दौरान बेसहारा जीव-जंतुओं व पशुओं के लिए खाने का प्रबंध कर के जीवों पर दया दिखाई और उनकी जान बचाई। वरना, उन पशुओं के मरने के कारण एक और संकट और संक्रमण की बीमारी फैल सकती थी।

15. हरा वृक्ष नहीं काटना: यह नियम बहुत ही महत्वपूर्ण है और वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अत्यधिक सार्थक है। वृक्ष परोपकारी होते हैं व पर्यावरण की शुद्धि और संरक्षण के लिए पेड़ों का होना अति आवश्यक है। वर्षा का होना काफी हद तक वृक्षों पर ही निर्भर करता है। यदि वृक्ष कट जाएंगे तो वर्षा नहीं होगी या कहीं कहीं अतिवृष्टि कहीं कम होगी जिससे अकाल पड़ सकता है और यदि अकाल पड़ जाए तो कोरोना संकट की वजह से पहले से ही दुनिया में आई हुई आर्थिक मंदी और भयंकर हो सकती है।

16. करे रसोई हाथ सूं आन सु पला न लावै: अर्थात् रसोई अपने हाथ से बनाना और अशुद्ध हाथों से बनाया गया भोजन ग्रहण नहीं करना। वर्तमान कोरोनाकाल के परिप्रेक्ष्य में यह नितांत आवश्यक नियम है। आज सबसे ज्यादा खतरा यदि है तो वह खाने-पीने की वस्तुओं से है। कई पाश्चात्य मुल्कों में लोगों ने काफी अर्से से अपने घर में अपने हाथों से खाना बनाना बंद कर दिया है। वहाँ अधिकतर लोग फास्ट फूड और होटलों का खाना खाते हैं जिसकी वजह से लॉकडाउन का पालन नहीं हो सका और लोगों को खाने के लिए होटलों के बाहर सड़कों पर लाइन

लगाकर खड़ा होना पड़ रहा है। ऐसा करना कोरोना वायरस के संक्रमण का बहुत बड़ा खतरा है। वैसे भी दूसरों के हाथों से बनाया हुआ भोजन कितना शुद्ध है यह कोई नहीं कह सकता। क्योंकि भोजन बनाते समय कोई देख नहीं सकता। जब तक हमें खाना बनाने वाले व्यक्ति की शुद्धता, सामग्री की शुद्धता और बनाने के तरीके की शुद्धता का पता नहीं इतने खाने की शुद्धता की कोई गारंटी नहीं हो सकती। इसलिए कोरोनाकाल में वैज्ञानिक व डॉक्टर भी खाने की वस्तुओं में भी सावधानी व शुद्धता पर जोर दे रहे हैं। गुरु जंभेश्वर भगवान ने तो आज से 535 वर्ष पहले ही यह नियम बना दिया था कि अपने हक की कमाई से अपने घर की रसोई व अपने घर के सदस्यों द्वारा हाथ से बनाया हुआ भोजन करना चाहिए और आन सु पला न लावै अर्थात ऐसे घर का या जगह का या ऐसे व्यक्ति द्वारा बनाया गया भोजन न करें जो अशुद्ध हो, खाना बनाने वाला व्यक्ति नहाया हुआ न हो, उसका पहनावा साफ न हो और जो पान, बीड़ी, जर्दा या मांस खाता हो, ऐसे व्यक्ति के हाथों से बनाया भोजन नहीं खाना चाहिए। इस नियम का पालन करने से कोरोना वायरस के संक्रमण से बहुत हद तक बचा जा सकता है।

17. अमल, तंबाकू, भांग व मदिरा का सेवन नहीं करना: इन मादक पदार्थों के सेवन से व्यक्ति की रोग प्रतिरोधक क्षमता क्षीण होती है जिसके कारण कोरोना वायरस का हमला आसानी से हो सकता है। क्योंकि कोरोना वायरस से मनुष्य का शरीर भी लड़ सकता है और यदि उसकी इम्यूनिटी पावर अर्थात रोग प्रतिरोधक क्षमता अच्छी हो तो आदमी संक्रमित होने के बावजूद भी उस वायरस से लड़ सकता है और स्वस्थ हो सकता है। इसलिए इन चीजों का प्रयोग वर्जित किया गया था।

18. मांस नहीं खाना: मांस मानव मात्र के लिए अखाद्य पदार्थ है। प्रकृति ने इंसान के भोजन के लिए फल, मेवों और अन्न के भंडार भरे हैं फिर भी जीव हत्या करके मांसाहार करना नासमझी का काम है। यह बहुत बड़ा पाप है। कुदरत ने इंसान की रचना मांसाहारी प्राणी के रूप में नहीं की है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि जीव-जंतुओं को मार-काट करके उनको कच्चा या पक्का खाने का दृश्य कितना घिनौना व पापयुक्त है। मीट मार्केट, मछली मार्केट या अन्य मीट की रेहड़ियो व दुकानों पर नर्क जैसा वातावरण रहता है और ये स्थान बीमारियों और वायरस का घर होते हैं। जीव जंतुओं में कई प्रकार की बीमारियों के वायरस होते हैं। कई प्रकार की बीमारियां जीव जंतुओं के वायरस से ही फैली हैं। मांस खाने से वायरस इंसान के शरीर में प्रवेश करते हैं और फिर एक इंसान से दूसरे इंसान में फैलते हैं। कोरोना वायरस भी चमगादड़ व पेंगुइन जैसे जीवो का मांस खाने से इंसान में आया और आज वैश्विक महामारी का रूप लेकर दुनिया के इंसानो के बीच मौत का तांडव कर रहा है। इसलिए गुरु जंभेश्वर भगवान ने आज से 535 वर्ष पहले ही मानव मात्र को मांस खाना वर्जित किया था और 29 नियमों में से यह एक अति महत्वपूर्ण नियम मांस न खाने का बनाया था।

अत: उपर्युक्त नियमों को मद्देनजर रखते हुए हम यह आसानी से कह सकते हैं की बिश्नोई धर्म के प्रवर्तक गुरु जंभेश्वर भगवान ने आज से 535 वर्ष पहले हर प्रकार के संक्रमण से बचने के लिए यह नियम बनाए जो वर्तमान समय में भी वैश्विक महामारी कोरोना वायरस के संक्रमण को फैलने से रोकने में बहुत ही अधिक सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

-**बनवारी लाल बिश्नोई** एडवोकेट
पूर्व निदेशक, अभियोजन विभाग हरियाणा
मो.: 9467297883

गुरु जांभोजी, विश्व चिंतन और वैज्ञानिक संदर्भ

आज संपूर्ण विश्व अशांत है। प्रत्येक व्यक्ति अशांत है। जगत् के अनेक प्रबुद्ध विचारक, वैज्ञानिक एवं राजनीतिज्ञ शांति स्थापना के लिए सतत् प्रयत्नशील है, किंतु शांति की संभावना उत्तरोत्तर दूर होती प्रतीत होती है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी आधुनिक युग में शांति के अग्रदूत थे। उनका संपूर्ण जीवन शांति के लिए प्रयत्न करने में बीता और उसी के लिए उनका बलिदान भी हुआ। वे भगवद् गीता के परम भक्त थे। धर्म की दृष्टि से किसी धर्म-संप्रदाय विशेष का नाम लिया जाए तो गांधी जी परम वैष्णव हिंदू थे, किंतु सभी धर्मों के प्रति उनका समभाव था। उन्होंने किसी भी धर्म-संप्रदाय आदि की कभी आलोचना नहीं की। सभी धर्मों को वे आदर की दृष्टि से देखते थे और स्थाई शांति के लिए वे सर्वधर्म समभाव को आवश्यक समझते थे। उनके जीवन काल में दो-दो विश्व युद्ध हुए और दोनों विश्व युद्धों में भी उनकी भूमिका एक शांति दूत के रूप में रही।

गुरु जांभोजी का जन्म ईसा की 15वीं शताब्दी के मध्य में हुआ था। यह युग संपूर्ण विश्व के लिए विचार क्रांति का युग माना जा सकता है। यह एक प्रकार से संक्रमण का काल था। इस युग में विभिन्न प्रकार की विचारधाराओं का आगमन हुआ। भारत भूमि पर इससे पूर्व महात्मा बुद्ध, भगवान महावीर तथा कुछ अन्य महापुरुषों ने समाज में ईश्वरवाद एवं धर्म के विरुद्ध आवाज उठाई थी। चीन में लाओत्से और कन्फ्यूशियस ने विचार क्षेत्र में क्रांति पैदा की थी। ग्रीस में सुकरात, पाइथागोरस और प्लेटो ने क्रांति की आवाज बुलंद कर रखी थी। इरान-परसिया में जर/रुस्ट चिंतन को नई दिशा दे चुके थे। अन्य राष्ट्रों में भी अपने-अपने स्तर पर विभिन्न महापुरुषों के द्वारा चिंतन को एक नई दिशा प्रदान करने का प्रयास किया गया।

प्राय: इन सभी महापुरुषों के चिंतन का अध्ययन विश्व दर्शन की आधार भूमि के रूप में किया जाता है। ये विश्व के महान चिंतक एवं दार्शनिक माने जाते हैं। गुरु जांभोजी का अध्ययन अभी तक इस प्रकार के व्यापक संदर्भ में नहीं हुआ है। हां, मेरी समझ से इस दृष्टि से अध्ययन के आयाम अवश्य विकसित हुए हैं, लेकिन अध्ययन नहीं। गुरु जांभोजी और उनके चिंतन का अध्ययन अब तक धार्मिक परिवेश और पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से अवश्य हुआ है। गुरु जांभोजी एवं उनके चिंतन को विस्तृत रूप से समझने के लिए उनके अध्ययन के विविध आयाम अभी तक बाकी है। जिन पर साहित्य अध्येताओं एवं शोधार्थियों की दृष्टि जाना अति आवश्यक है। उनके चिंतन का एक आयाम गुरु जांभोजी का अध्ययन विश्व चिंतन और वैज्ञानिक संदर्भ में किया जाना आवश्यक है।

गुरु जांभोजी विश्व के एक महान दार्शनिक, पंथ-संस्थापक, धर्म-नियामक एवं समाज सुधारक थे। उनका चिंतन सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन से गहरा संबंध रखता है। यदि सामाजिक जीवन को गुरु जांभोजी का चिंतन समग्र रूप से प्रभावित नहीं करता तो इतने लंबे समय तक उनकी परंपरा का चलना संभव नहीं था और उनका शिष्य समाज इतना वृहत एवं विस्तृत नहीं होता। उनका चिंतन अत्यंत संतुलित, संयमित, आदर्शपूर्ण और समन्वयवादी था। प्रत्येक धर्म, वर्ण एवं वर्ग को उन्होंने प्रभावित किया तथा लोगों ने उनका अनुसरण भी किया। गुरु जांभोजी के संपर्क में युगीन कई राजा, पंडित, काजी तथा धार्मिक क्षेत्र के दिग्गज भी आए थे। गुरु जांभोजी के चिंतन से वे प्रभावित भी हुए। उनके साथ शास्त्रार्थ भी हुआ और धार्मिक भावनाएं भी विकसित हुई। धार्मिक चेतना के साथ-साथ उन्होंने जीव दया, अहिंसा, सत्य, पर्यावरण संरक्षण आदि पर भी अत्यधिक बल दिया। यदि गुरुजी ने मात्र धर्म को ही नया रूप प्रदान किया

होता तो गुरु जांभोजी को जितनी बड़ी सफलता अपने जीवन में अपने मिशन (लोक कल्याण) या एक नई पंथ की स्थापना को व्यापक रूप देने में मिली, वह शायद नहीं मिल पाती। उनके समकालीन या उनके पश्चय-पूर्व कई विचारक एवं युग महापुरुष भी भारत भूमि पर अवतरित हुए, किंतु गुरु जांभोजी और गुरु नानक देव के चिंतन को जो व्यापकता मिली, उतनी व्यापकता अन्य महापुरुषों को नहीं। गुरु जांभोजी के समग्र चिंतन का प्रतिफल बिश्नोई पंथ की स्थापना है, वहीं गुरु नानक देव का चिंतन सिख धर्म के रूप में पल्लवित-पुष्पित हुआ। इन दोनों महापुरुषों की चिंतन परंपरा 500 से अधिक वर्षों से जीवंत रूप में चली आ रही है। जो इन महापुरुषों के संयमित, संतुलित, समन्वयवादी, सामाजिक, राजनीतिक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रतिफल है। गुरु जांभोजी ने उत्तर भारत में संतमत का जो वैचारिक बीड़ा उठाया उनकी देन ही विश्नोई पंथ है।

गुरु जांभोजी को अपने युग में जितनी सफलता मिली, उससे भी अधिक व्यापक प्रसार बाद के युग में मिला। कहने का तात्पर्य यह है कि गुरु जांभोजी ने जिस वैचारिक चिंतन का समाज में प्रचार-प्रसार किया, एक नए पंथ की स्थापना की थी, जो सामाजिक रूप से पांच शताब्दियों पश्चात भी एक नवीन दृष्टिकोण के साथ वर्तमान है। एक सुदृढ़ सामाजिक संगठन के रूप में राष्ट्र में अपनी विशेष भूमिका अदा कर रहा है। इसका कारण गुरु जांभोजी का विस्तृत एवं दूरगामी चिंतन है। उनके चिंतन ने सामाजिक जीवन को समग्र रूप से प्रभावित किया।

उपर्युक्त बातों को मद्देनजर रखते हुए गुरु जांभोजी के चिंतन का अध्ययन करने के लिए कुछ आधार सूत्र जिस पर विचार किया जा सकता है-

वर्ग विहीन समाज संरचना:

गुरु जांभोजी के समय में समाज अस्पृश्यता, ऊंच-नीच, बाह्य आडंबर, धार्मिक रूढ़ियों, अनेक जातियों, नीतियों एवं कुरीतियों से ग्रस्त था। समाज में निराशा, मूल्यहीनता एवं मानसिक दुर्बलता व्याप्त थी।

वर्ग भेद काफी तीव्र था। ऐसे समय में गुरु जांभोजी ने अपनी वाणी के माध्यम से समाज में प्रचलित विभिन्न विषमताओं को दूर करने का एक सद् प्रयास किया। युगीन समाज की स्थिति, मूल्यों एवं दिशा को उन्होंने समझा। गुरु जांभोजी ने समाज एवं धर्म के नाम पर पाखंड का प्रचार करने वाले लोगों से लोहा भी लिया। किसी भी समाज को विशिष्ट स्थान पर स्थापित करने के लिए समाज में मूल्यों का सर्वाधिक महत्व होता है। गुरु जांभोजी ने भी समाज में आदर्श जीवन मूल्य प्रदान करने के साथ-साथ उत्तम ढंग से जीवन यापन करने की विधि बताते हुए, सर्वांगीण विकास की राह प्रशस्त की थी। उनके दर्शन के अनुसार ऊंच-नींच, भेदभाव, वर्ग, जाति आदि कुछ नहीं है। सबसे बड़ा मानव धर्म है। जो मानवता की राह पर चलते हुए जीवन यापन करता है, वही श्रेष्ठ व्यक्ति हैं। '**उत्तम कुलि का उत्तम न होयबा, कारण किरिया सारू**'।

इस प्रकार उनकी वर्ग विहीन, समग्र समाजवादी समाज की संरचना युग में क्रांतिकारी साबित हुई। साथ ही भविष्य के लिए भी लोक कल्याण एवं सामाजिक सु ढ़ता की राह प्रशस्त करने में सफल हुई।

व्यक्ति की प्रतिष्ठा:

व्यक्ति समाज की सबसे महत्वपूर्ण इकाई है। गुरु जांभोजी के समय व्यक्ति अपने पौरुष से हताश था। उनके आध्यात्मिक चिंतन का अस्तित्व खतरे में था। एक सच्चे पथ-प्रदर्शक एवं सच्चे गुरु की उस युग में महती आवश्यकता थी। विभिन्न प्रकार के पाखंड, भूत, प्रेत, भूमियों का बोलबाला था। तब गुरु जांभोजी ने व्यक्ति की बाह्य एवं आंतरिक पवित्रता के साथ विष्णु की सर्वव्यापकता को प्रदर्शित किया। व्यक्ति

को किसी प्रकार का नशा, चोरी, झूठ, निंदा आदि न करते हुए सात्विक भोजन तथा जीव हत्या नहीं करने का चिंतन प्रदान किया। व्यक्ति को सत्कर्म करने की प्रेरणा प्रदान की। गुरु जांभोजी के इस चिंतन ने व्यक्ति को जो आत्मबोध कराया वह सामाजिक जीवन का मूल आधार बना और आज भी है।

यज्ञ की प्रतिष्ठा:

वैदिक युग से ही अग्नि की पूजा की जाती थी। यज्ञ सनातन धर्म परंपरा में अति प्राचीनकाल से ही प्रचलित था। यज्ञ समाज के धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक जीवन का केंद्र बिंदु था, लेकिन भगवान महावीर ने समाज के आर्थिक जीवन को प्रभावित करने वाला बताते हुए यज्ञ का विरोध किया। इस्लाम के आगमन के साथ ही यज्ञमूलक संस्कृति समाज में काफी क्षीण हो चुकी थी। ऐसे युग में गुरु जांभोजी ने समाज को यज्ञ करना न केवल धार्मिक अपितु पर्यावरण सरंक्षण एवं मानव के उत्तम स्वास्थ्य के लिए भी आवश्यक बताते हुए प्रतिदिन प्रत्येक घर में हवन करने का चिंतन प्रदान किया। गौ घृत से किया जाने वाला यज्ञ वर्तमान में वायु प्रदूषण को रोकने में सर्वाधिक प्रभावी है। गुरु जांभोजी के इस यज्ञ मूलक चिंतन की समाज में व्यापक प्रतिष्ठा हुई और प्रत्येक घर में प्रतिदिन हवन करना लोगों के जीवन का अनिवार्य अंग बन गया।

विचारमूलक आचार:

समाज व्यवस्था के लिए गुरु जांभोजी ने अपने चिन्तन के अंतर्गत विचारमूलक आचार को भी प्रधानता दी । लोगों को दिए जाने वाले उनके उपदेश आज लोक में पंचम वेद के नाम से भी जाने जाते हैं। उनके संबंध सामूहिक रूप से सबदवाणी या जंभवाणी के नाम से भी प्रसिद्ध एवं प्रचलित हैं। इसमें गुरु जांभोजी के विश्वव्यापी लोक कल्याणकारी चिंतन का समावेश शब्दों के रूप में संरक्षित एवं सुरक्षित है। गुरु जांभोजी का आचार-विचारमूलक था। यह सभी के लिए था, इसमें किसी प्रकार का वर्ग भेद नहीं था। उनकी वाणी सभी के लिए आचार संहिता हैं।

राजनीतिक जीवन:

गुरु जांभोजी का युग राजनीतिक दृष्टि से भी सर्वाधिक विषमताओं और मतभेद का युग था। राष्ट्र के अलग-अलग हिस्सों में राजा-महाराजाओं के मध्य परस्पर राज्य प्राप्ति या राज्य पर अधिकार करने के लिए युद्ध हो रहे थे। युगीन शासक सिकंदर लोदी के अलावा राव जोधा, राणा सांगा, राव मालदेव,रावल जेसिंह, लूणकरण जैसे प्रतापी शासक भी गुरु जांभोजी के चिंतन से प्रभावित हुए। राव दूदा और राणा सांगा के जीवन पर तो गुरु जांभोजी के चिंतन का सर्वाधिक प्रभाव पड़ा। गुरु जांभोजी का जन्म भी पीपासर के ग्रामपति ठाकुर रोलोजी पंवार के कुल में हुआ, जो विक्रमादित्य की बैयालीसवीं पीढ़ी के वंशज बताए जाते हैं। राजनीतिक इतिहास, प्रशासन एवं उनके प्रति जो गुरु जांभोजी का वैचारिक दृष्टिकोण उनका वैश्विक चिंतन आवश्यक है। गुरु जांभोजी ने जो उपदेश दिए एवं उनकी वाणी में जो सबद संकलित है, वे मानव समुदाय को आशा, उत्साह और पौरुष से उद्दीप्त करने वाले हैं। उनके अनुसार संसार में सभी को जीवन जीने का अधिकार है, चाहे वह मनुष्य हो, पेड़ पौधा हो, व्यक्ति हो या पशु-पक्षी हो। गुरु जांभोजी के उपदेश किसी एक देश के लिए नहीं, जाति के लिए नही, एक वर्ग विशेष के लिए नहीं, एक काल के लिए नहीं अपितु यह पीयूषवर्षी अमृतवाणी पंचम वेद है। इसका संदेश सनातन है, सार्वभौम है और सार्वकालिक है।

किसी भी प्रकार के जीव आदि की हिंसा करना मानव जाति के लिए महाविनाश और सर्व विनाश है। यह मानव के संयमहीन, पाशविक प्रवृत्ति का प्रतीक है। जांभाणी दर्शन जीवों की रक्षा, प्रगति और उनके संवर्धन का प्रतीक है। आज मनुष्य जाति अनेक दलों,

राष्ट्रों, विभिन्न राजनीतिक शिविरों एवं वर्ग समूह में बंटी हुई है। परस्पर घृणा, वैमनस्य और विरोध का ज्वर उठ रहा है। कोई भी किसी के दृष्टिकोण को समझने, समझाने के लिए तैयार नहीं है। उस समय केवल गुरु जांभोजी की वाणी की एक पंक्ति- 'जो कोई आवे हो हो करतो आपहु होइये पाणी' और 'वाद-विवाद फिटा कर प्राणी'- यह एक ऐसा उपाय है, जो विश्व मैत्री, मानव एकता एवं परस्पर सहानुभूति जगा सकती हैं। परस्पर वैमनस्यता एवं दुराग्रह से मनुष्य जाति को मुक्त करा सकती हैं। यदि आज मनुष्य मनुष्य से प्रेम करना चाहता है और मानव की रक्षा चाहता है तो उसे गुरु जांभोजी के सिद्धांतों को अपनाना पड़ेगा। उनके दर्शन में मानव जीवन की श्रेष्ठता, आंतरिक एवं बाह्य पवित्रता और परमात्मा की सर्वव्यापकता निहित हैं। गुरुजी की वाणी शांत, धीर, गंभीर, प्रगतिशील, नवीन दृष्टिकोण की आवाज से आलोकित है। व्यक्ति, समाज, राष्ट्र सभी को जंभवाणी मानव की समस्त समस्याओं का समाधान बताती हैं। विश्व मंगलम, विश्व शांति के लिए गुरु जांभोजी की अमृतवाणी को जन-जन तक पहुंचाया जाना आवश्यक है। आज की इस हिंसा, घृणा, क्रोध, करुणा और अशांति से त्रस्त दुनिया में गुरु जांभोजी का शुद्ध, शांत, निर्विकार, विश्वमैत्री, संयम, त्याग, तपस्या, त्याग, शील का संदेश महत्वपूर्ण एवं प्रभावी है।

'जीव दया पालना और हिंसा न करना' गुरु जांभोजी का यह अहिंसा विषयक सहिष्णुतावादी सिद्धांत है। इनमें यथार्थवादी साहित्य के चिंतन की एक विशिष्ट चिंतन पद्धति है। जिसके अनुसार पंथ के साहित्यकारों ने अपनी कृतियों में जीवन के यथार्थ रूप का अंकन किया है। इस पंथ के संतकवियों का दृष्टिकोण आदर्श इसलिए है कि उन्होंने धर्म के आंतरिक पक्ष पर जोर दिया है। आंतरिक पक्ष के अंतर्गत वे मानव के मानवीय सुख, आध्यात्मिक सुख या ऐसे कहे तो एक प्रकार से आदर्श जीवन जीने की कला निहित है। इनके साहित्य में गुरु जांभोजी की वाणी का शाश्वत स्वरूप, विष्णु की चिरंतन सत्यता और आदर्श जीवन जीने की विधि संनिहित हैं। इस पंथ का जो कथा साहित्य है वह बिश्नोई पंत की अभिवृद्धि एवं नूतनता का द्योतक है। इनमें विश्नोई धर्म, दर्शन एवं समाज की गुरु जांभोजी के प्रति प्रगाढ़ आस्था समाहित है। इस प्रकार गुरु जांभोजी का इन संदर्भ में अध्ययन करने पर गुरु जांभोजी एक महान् समाज शास्त्री के रूप में भी हमारे सामने आते हैं और उनका चिंतन एक ऐसा समाजशास्त्रीय दर्शन प्रस्तुत करता है, जो देश और काल की सीमाओं से परे हैं। संपूर्ण विश्व के मानव मात्र के लिए प्रभावी एवं महत्वपूर्ण है।

अब गुरु जांभोजी के चिंतन का अध्ययन इस दृष्टि से भी किया जाना आवश्यक है कि विश्व के दार्शनिक चिंतकों के साथ-साथ गुरु जांभोजी के चिंतन का अध्ययन विश्व कल्याण के लिए कितना प्रभावी है तथा दर्शन के क्षेत्र में क्या नवाचार स्थापित कर सकता है। दर्शन विचारकों के साथ-साथ गुरु जांभोजी के चिंतन का वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी समझना आवश्यक है। इस संबंध में गुरु जांभोजी के 550 से अधिक वर्षों से प्राप्त साहित्य में जो वैज्ञानिक तथ्य उपलब्ध होते हैं, उनका अध्ययन किए जाने तथा उनके द्वारा प्रतिपादित 29 धर्म-नियम एवं उनके विचारों की सैद्धांतिक मान्यताओं के प्रायोगिक अध्ययन की आवश्यकता है। इस विषय हेतु कला एवं समाज विज्ञान विषय के साथ-साथ मानविकी एवं विज्ञान विषय के निष्णांत और निष्ठावान अध्येता तथा सिद्धांत के सच्चे ज्ञाता जब इस विषय में सम्मिलित होकर एक नई दिशा प्रदान करेंगे, तभी इस प्रकार का अध्ययन संभव है।

-डॉ. रामस्वरूप
ग्राम पोस्ट जैसलां, तह.-बाप,
जिला-जोधपुर राजस्थान
मो.: 9782005752

आत्मा के अस्तित्व पर विमर्श

चर्चा आरम्भ करने से पहले पाठकों को स्पष्ट होना चाहिये कि जाम्भो जी ने आत्मा और परमात्मा शब्द का प्रयोग सारी सबदवाणी में नहीं किया है। वे आत्मा और परमात्मा को भिन्न नहीं मानते, क्योंकि अद्वैतवाद का ये मूल सिद्धांत है। किंतु सनातनी विचारधारा इस बिंदु पर बहुत जोर देती है और उसी के आधार पर पाप, पुण्य, स्वर्ग, नर्क आदि की कहानियाँ गढ़ी जाती हैं और यही सबदवाणी के सही अर्थ को समझने में बाधा उत्पन्न करती है। सनातन विचारधारा इस बात का कभी जवाब नहीं देती कि यदि आत्मा परमात्मा का अंश है और शरीर यहीं समाप्त हो जायेगा तो नर्क में प्रताड़ना किसको मिलेगी और स्वर्ग में सुख किसको मिलेगा क्योंकि सनातनी विचारधारा कहती तो यही है कि आत्मा सुख-दुख दर्द से परे है तथा जैसे परमात्मा निराकार है वैसे ही आत्मा भी निराकार है। जब निराकार है, अदृश्य है तो आत्मा को क्लेश या आनंद नर्क और स्वर्ग में क्यों और कैसे है? यदि वहाँ क्लेश होना है तो आत्मा गलत काम पर यहाँ क्यों नहीं कचोटती? या उसे ये नहीं पता कि मरणोपरांत उसके मौन को भी पाप समझ कर दण्डित किया जायेगा? इसलिये इन बातों में सत्य कुछ नहीं है। तो मूल रूप से आत्मा और परमात्मा के विचार में गम्भीर मतभेद हैं जिनको जाम्भो जी ने अस्वीकार करते हुए साधारण जीने के तरीके पर ही जोर दिया जिससे मोक्ष जीते जी ही मिल जाये- 'जियाँ न जुगति मुवां न मुकति!' जाम्भाणी पंथ मरणोपरांत मोक्ष को महत्व नहीं देता है क्योंकि अद्वैतवाद में समस्त एक ही सत्ता है- उसे ईश्वर कहो, चाहे उसे ऊर्जा, या शक्ति कहो। उसे मुक्ति देने वाला दूसरा कोई नहीं है।

हजारों साल पहले भारतीय वाङ्मय में आत्मा के बारे में ये बात लिखित रूप में आ चुकी थी और देवाचार्य ब्रहस्पति (जो देवताओं के गुरु थे) कहते हैं कि-

''जैसे भौतिक पदार्थों के विशिष्ट संयोग और उनके खमीर से मदिरा बनने के बाद, जो नया गुण पैदा हो जाता है, उसी प्रकार विविध भौतिक पदार्थों की आपसी विशिष्ट जटिल क्रियाओं से शरीर में चेतना पैदा होती है, जो मूल पदार्थों की मौजूदगी तक ही रह सकती है। शरीर को बनाये रखने वाले पदार्थों में विघटन-प्रक्रिया प्रबल होने से बुढ़ापा आता है और अंततः चेतना सहित शरीर का अंत हो जाता है। अध्यात्मवादी इस चेतना को 'आत्मा' कहते हैं।"

क्या ये बात देवता (यदि वे थे तो) समझ नहीं पाये थे। क्या देवता भी इतनी मोटी अक्ल के थे कि अपने गुरु की साधारण सी बात को समझने की बजाय, पूरे ग्रंथ रच डाले जिनमें परमात्मा, आत्मा, स्वर्ग, नर्क, पुनर्जन्म, पाप पुण्य का लेखा जोखा, बीसियों नर्कों की व्याख्यायें और जाने क्या क्या कथायें रच डाली लेकिन अपने गुरु की इस बात को फिर कहीं नहीं बताया। वह केवल इसलिये कि धर्म का धंधा इस विचार के रहते चल ही नहीं सकता था। वैसे नाम के देवता कोई रहे हों, असल में धरती पर अपने आप को देवता कहलवाते केवल ब्राह्मण ही थे।

प्रसिद्ध आयुर्वेदाचार्य 'चरक' कहते हैं- 'शरीर भोजन का रूपांतरण है। इस भोजन के तहत बुद्धि और जीवन-प्रतिभा भी शामिल है।'

इससे स्पष्ट है कि आत्मा किसी परमात्मा का अंश नहीं है। किंतु यह कह देने के बाद भी परमात्मा को जब तक समझा नहीं जायेगा, आत्मा के बारे में भी भ्रम बना रहेगा। ईशोपनिषद् का कहना है-

पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।

अर्थात् 'वह' (ईश्वर) पूर्ण है, 'यह' पदार्थ या सृष्टि रचना होने बाद भी 'वह' पूर्ण है, क्योंकि पूर्ण में से यह पूर्ण उत्पन्न हुआ है। पूर्ण में से पूर्ण को निकाल लेने पर भी वह पूर्ण ही बचता है। एक बार ईश्वर को भूल कर आप कल्पना कीजिये कि ऐसी क्या चीज है जो पूरी है और उसमें से पूरी को भी निकाल लिया जाये तो भी वह पूरी ही रहेगी? ये बात वस्तुतः तभी सम्भव है यदि समस्त सृष्टि में केवल एक ही तत्त्व है और वह एक ही वस्तु की बनी है। आप प्रयास करेंगे तो पायेंगे कि वह तत्त्व केवल और केवल ऊर्जा ही हो सकती है, जिसका वैज्ञानिक फार्मूला आंइस्टाइन ने सापेक्षता के सिद्धांत में दिया था। ($E= mc^2$ जिसमें c^2 ऊर्जा है, m पदार्थ है और c^2 का अर्थ है प्रकाश की गति का वर्ग) जिसके अनुसार सृष्टि केवल ऊर्जा है

और ऊर्जा अपना रूप बदल सकती है। पदार्थ भी ऊर्जा है और आण्विक शक्ति और एटम बम भी इसी फार्मूले पर आधारित है। एक प्रकार की ऊर्जा दूसरे प्रकार की ऊर्जा बन सकती है जैसे सूर्य की ऊर्जा से बीज से पेड़-पौधे उगते है और अंततः लकड़ी जलाने पर अग्नि या उष्मा की ऊर्जा में बदल जाती है। इसी उष्मा को थर्मल प्लांट में बिजली में बदला जा सकता है और यही ऊर्जा जब सौर ऊर्जा से पेड़-पौधे और बालक से प्रौढ़ जीव बनती है तो वह ऊर्जा पदार्थ बनती रहती है। वह पदार्थ मरणोपरांत जल कर या दफनाने पर वापिस पदार्थ और ऊर्जा में बदल जाता है और ये साइकल चलता रहता है। अर्थात् रूप बदल कर भी ऊर्जा तो ऊर्जा ही रहेगी। वह पूरी है और पूरी ही रहेगी और पदार्थ भी ठोस ऊर्जा ही है। इसीलिये उपरोक्त श्लोक सत्य है कि पूर्ण में से पूर्ण निकलने पर भी वह (ईश्वर अथवा ऊर्जा) पूर्ण ही रहता है।

किसी भी अन्य वस्तु या कल्पना में ऐसी चीज नहीं है जो पूर्ण में से कुछ निकालने पर पूर्ण रहती हो। ऊर्जा पूर्ण इसलिये है क्योंकि ऊर्जा का केवल रूप ही बदलता है, वह समाप्त होती ही नहीं। ऊर्जा समस्त ब्रह्मांड में एक माप की सदा ही बनी रहती है, इसे ना बढ़ाया जा सकता है ना घटाया जा सकता है। ब्रह्मांड में केवल दो ही चीज हैं- ऊर्जा और पदार्थ। पदार्थ भी ऊर्जा का ही ठोस स्वरूप है। विज्ञान का एक सिद्धांत है कि ऊर्जा अविनाशी है, वह अलक्ष्य है, वह स्वयंभू है, वह आदि तत्त्व है, और यही सारे विशेषण हम ईश्वर के लिये भी प्रयुक्त करते हैं।

पदार्थ हमारे सौरमंडल में ही बहुत है, किंतु जीवन केवल पृथ्वी पर ही है और ये नहीं है कि जल अन्य ग्रहों पर नहीं है। अन्य जगहों पर आकाश, जल, अग्नि, वायु और पृथ्वी के समान ही पदार्थ भी है। यदि इन्हीं तत्वों से जीवन होता तो हर नक्षत्र, ग्रह, उपग्रह जिसमें जल होता वहाँ जीवन होता। लेकिन जीवन सब जगह नहीं है और क्योंकि समस्त एक ही है और परमात्मा सब जगह है और आत्मा सब जगह उपलब्ध है तो पाँच तत्वों वाले किसी भी जगह जीवन होता। इससे एक ही निष्कर्ष निकलता है कि आत्मा मूल चीज नहीं है, बल्कि जीवन के लिये मूल बात है उन एलिमेंट्स और रसायनों का सही अनुपात में, सही जगह पर, सही परिस्थितियों में और सही समय पर होना है। ये नहीं होगा तो जीवन नहीं होगा। अर्थात् आत्मा होगी, परमात्मा भी होगा किंतु जीवन नहीं होगा।

सब कुछ होते हुए भी मछली रेगिस्तान के टीबों पर नहीं पैदा होती। वहाँ महापंचभूत तत्त्व भी है और परमात्मा भी है, तो हर प्रकार का जीवन वहाँ क्यों नहीं है? सभी महाद्वीपों की मनुष्य और जीव प्रजातियाँ भिन्न हैं, क्योंकि उनके परिवेश भिन्न है और जीवन के लिये उपयोगी और उपलब्ध रसायन भिन्न हैं, जहां जीवों के शरीर की रचना भिन्न है। मछली की लाखों प्रजातियाँ हैं, लेकिन धर्म के हिसाब से योनि एक है। मनुष्य की योनि में लेकिन अंतर बताया जाता है। ब्राह्मण की योनि भिन्न है, क्षत्रिय की अलग और शूद्र की अलग है। धर्म के अनुसार ये यदि अलग योनियाँ हैं तो इनकी संरचना में भी भिन्नता होनी चाहिये, किंतु वह असल में भिन्न नहीं है। आदमी का ढाँचा वही है चाहे वह चीनी है, भारतीय है, अफ्रीकी है, या अमरीकी है, शूद्र है या ब्राह्मण, उसकी सारी शारीरिक संरचना वही है। इस कोरोना की बीमारी ने ये और भी अच्छी तरह सिद्ध कर दिया है कि इंसान सब बराबर हैं। बीमारी सबको बराबर लगती है। दवा भी असर बराबर करती है। किसी देवता के आशीर्वाद से, किसी तावीज से, किसी टोने टोटके से या किसी साधु की खीर से या धूप बत्ती से कोई बीमारी ठीक नहीं होती।

बात का सारांश है कि आत्मा और चेतना क्या है? क्या यह आत्मा शरीर से भिन्न वस्तु या तत्त्व है? क्या आत्मा बिना शरीर के अस्तित्व में रहती है। ये पूछने पर इसका जवाब देने में धर्म कहानियाँ गढ़ने लगता है और शरीरविहीन आत्मा को सशक्त दिखाने में भूत, प्रेत, देवता, स्वर्ग, नर्क, पुनर्जन्म की कल्पना करता है। पाप-पुण्य का लेखा जोखा और एक ऐसी सत्ता का अस्तित्व मान कर चलता है जो बिलकुल उसी तरह ही सोच सकता है जिस तरह धर्म विशेष का धर्माधिकारी सोच सकता है। यदि ईश्वर एक है तो भिन्न धर्माधिकारियों द्वारा एक बात पर भिन्न मत व्यक्त करने का मतलब है कि वह मत उनका निजी है क्योंकि यदि ये ईश्वर या परमात्मा का मत होता तो निश्चय ही सभी धर्मों में ईश्वर का संदेश और मत एक होता। कभी कोई परमात्मा या कोई आत्मा आकर ये नहीं बताती कि वह शरीर के मरने के बाद भी जीवित है, और कि स्वर्ग नर्क में उसे देखने को क्या मिला। लेकिन भारतीय धर्म ग्रंथ ये बता कर हजारों सालों से लोगों को

बेवकूफ बनाते आये हैं। धर्म इस सीमारेखा पर बहुत कुछ अनर्गल कहने लगता है, जिसका कोई उचित निष्कर्ष नहीं निकालता है- जितने मुँह उतनी बातें और व्याख्यायें निकलने लगती है। ये स्पष्ट जवाब ना होना और रहस्य को कथाओं में बाँध कर और गहरा करना ही धर्म का खेल है। जब-जब कोई इस खेल के नियम जान कर खुलासा करने का प्रयास करता है तो उसे नास्तिक कह कर खेल से बाहर करने का प्रयास सदा से होता आया है। ये प्रश्न बुद्ध ने किये, महावीर ने किये, चार्वाक ने किये और यही बात देवताओं के गुरु ऋषि बृहस्पति ने भी कही थी किंतु किसी देवता या ब्राह्मण ने मानी नहीं।

देवाचार्य बृहस्पति के कथन को दोबारा देखें-

''भौतिक पदार्थों की आपसी विशिष्ट जटिल क्रियाओं से शरीर में चेतना पैदा होती है, जो मूल पदार्थों की मौजूदगी तक ही रह सकती है। शरीर को बनाये रखने वाले पदार्थों में विघटन प्रक्रिया प्रबल होने से बुढ़ापा आता है और अंततः चेतना सहित शरीर का अंत हो जाता है। अध्यात्मवादी इस चेतना को 'आत्मा' कहते हैं।"

इस बात को नास्तिकता कहकर उपेक्षा करना गलत होगा। बात विचारणीय है। हैरानी इस बात पर है कि ये कथन धर्म के सामने था, फिर भी आत्मा के बारे में और परमात्मा के बारे वही धर्म क्या क्या बातें नहीं बनाता रहा है।

अष्टावक्र भी राजा जनक को समझाते हुए कहते हैं-

प्रकरण-6, श्लोक-4

अहं वा सर्वभूतेषु सर्वभूतान्यथो मयि।
इति ज्ञानं तथैतस्य न त्यागो न ग्रहो लयः ॥4॥

मैं सब प्राणियों में हूँ और सब प्राणी मुझ में स्थित हैं। यही निश्चित और सत्य है। यही ज्ञान है। इसलिये इसका न त्याग है, न ग्रहण है और न लय है। सब मुझ में और सब में मैं, तो ग्रहण किसका, त्याग किसका और किसमें विलय होना है। ऐसे में सर्वव्यापक है वह जिसमें लय होगा और कौन करेगा लय का प्रयास। जब सब मैं ही हूँ तो सब कहाँ रहा। 'मैं हूँ' इतना कहना ही पर्याप्त है। जब मैं ही हूँ और कुछ भी नहीं है, तो त्याग, ग्रहण और लय का प्रश्न ही नहीं उठता है।'

यही अहम् ब्रह्मास्मि की व्याख्या है और यही जाम्भो कह रहे हैं, जब वे कहते हैं-

'मोरे छाया न माया लोही न मासुं
रक्तू न धातूं मोरे माय न बापूं।
आद-अनाद तो हम रचिलों,
हमै सिरजिलों से कौण?'

अर्थात् सर्वस्व केवल एक है और एक है तो आत्मा और शरीर भी दो नहीं हैं। शरीर केवल एक स्थिति है जो प्रकृति के उत्पादों की विशेष समन्वय से केवल पृथ्वी पर ही सम्भव हो सकी है। इस बात को समझना बहुत आवश्यक है।

जाम्भो जी बार-बार ये बात कहते हैं-

जोगी रे तूं जुगति पिछांणी, काजी रे तूं कलंम कुरांणी।
सबद 68

वे यहाँ तक कहते हैं कि वेद, कुरान आदि सब दंत कथायें हैं जिनमें सत्य का अंश नाममात्र का है। इसलिये इनकी आत्मा परमात्मा की कथाओं पर विश्वास मत करो।

वेद कुरांण कुंमाया जाळूं दंत कथा जुगि थाई। सबद-97

अब यदि हम एक ही हैं, समस्त एक ही है, तो शरीर और आत्मा का अंतर भी समाप्त हो जाता है। जिस चेतना को आत्मा कहा जाता है वह उन गुणों से ही युक्त है जिसमें इस शब्द की कल्पना 'उस' 'एक' को ही प्रतिबिम्बित करती है, उसका पृथक अस्तित्व नहीं है। चेतना केवल वह ऊर्जा ही है जो उन रसायनों के और एलिमेंट्स की उपस्थिति से उत्पन्न हुई है। ये रसायन यदि उपलब्ध नहीं हैं तो आत्मा अकेली शरीर और जीवन पैदा नहीं कर सकती। उस ऊर्जा के बिना सृष्टि की रचना नहीं हो सकती, और हर पदार्थ का ढेर भी जीव के जीवन का आधार नहीं बन सकता। पदार्थ के विशेष अनुपात से ही पदार्थ में छिपी वह ऊर्जा -चेतना को उत्पन्न करती है। धर्म ने ये गलत बताने का प्रयास किया है किवह ऊर्जा एक ईश्वर है जो अपनी मर्जी से जब तब जो जी में आये सृष्टि की रचना और उसका विनाश करता है- जो कि केवल धर्मान्धता को ही बढ़ावा देने के लिये सत्य के साथ छेड़छाड़ है, बल्कि सत्य को रहस्य में लपेटना भर है जिससे जितने मुँह उतनी बातें निकलें और धर्म एक अंतहीन रोचक उपन्यास की तरह लगे।

कुछ ग्रंथ सही कहते हैं तो कई ग्रंथ बहुत गलत भी

कहते हैं। मनुस्मृति में कहा गया है-

''ब्रह्मा ने अपनी संकल्प- विकल्प वाले मन को उत्पन्न किया और इसी मन से अहम् भाव को जन्म दिया।'' 1/16

अर्थात् ब्रह्मा ने अहम् भाव मनुष्य के शरीर से पहले ही बना लिया गया था और इसी अहम् भाव को लेकर तमाम धर्मयुद्ध और देवासुर संग्राम हुए थे। तमाम अवतार हुए थे। इसका अर्थ है कि इन युद्धों के लिये मनुष्य नहीं बल्कि स्पष्टत: ईश्वर ही जिम्मेवार है। ईश्वर ऐसी गलती और ऐसी स्थिति पैदा ही क्यों करेगा जिसमें वह अपने आप से लड़ता ही रहेगा ?

विज्ञान में 118 एलिमेंट्स हैं और अधिकांश का जीव सृजन और निर्वहन में कोई न कोई योगदान है। लेकिन मनुस्मृतिकार किसी एलिमेंट के बारे उल्लेख नहीं करता। उसके लिये केवल पाँच ही एलिमेंट हैं। आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी और उनके अनेकानेक एलिमेंट के बारे में ना वे कुछ जानते हैं और ना ही शोध के लिये प्रेरित करते हैं क्योंकि उनके विचार में जो ज्ञान था वह समस्त ईश्वर ने ऋषियों को दे दिया जिसे उन्होंने धर्म ग्रंथों में लिख दिया है। अब उस के बाद तो ज्ञान का उत्तरोत्तर ह्रास ही होना है क्योंकि समय सतयुग से कलियुग की ओर जाना है। यानि मनुष्य प्रगति की सोच ही आधारहीन है। ऐसे में कोई देश धार्मिक प्रवृत्ति के आतंक में प्रगति की सोच कैसे सकता है। जहाँ धर्म का संकुचित वातावरण होगा वहाँ विज्ञान को सदा शक की निगाह से देखा जाता रहेगा। शिक्षा और जागृति को अनधिकृत चेष्टा समझा जाता रहेगा, जैसा कि हमारे समाज में अनेकों जगह ये देखने को मिलता है।

सभी धर्मों में एक बात सामान्य है कि वे अपनी किसी भी बात को सिद्ध नहीं कर सकते। वे चाहते हैं कि आप उनका कहा बिना प्रश्न किये मान लें क्योंकि आस्थावान को ही ईश्वर मिलते हैं। जो भी आपको 'मानने' के लिये कहता है वह आपको धोखा देकर गलत रास्ते पर ले जा रहा है, जो आपको 'जानने' के लिये कहता वह सत्य के रास्ते पर है। धर्म सदा मानने का आग्रह करता है और जानने वाले का विरोध करता है। यहाँ आकर जाम्भो जी और अन्य धर्मों में अंतर स्पष्ट होता है। जाम्भो जी ने बार-बार मूल बात की खोज करने को कहा है। उनके कहे हुए को मानने की बात कहीं नहीं कही है, बल्कि उसे जानने और समझने की बात कही है।

विज्ञान के शोध में अब हर इंद्री का प्रत्यारोपण सम्भव है। जन्म से अंधे को दृष्टि दी जा सकती है। कान में शब्द सुनने की क्षमता न हो तो उसे वह क्षमता भी दी जा सकती है। स्पर्श, गंध स्वाद आदि भी प्रत्यारोपित किये जा सकते हैं या कृत्रिम भी बनाकर लगाये जा सकते हैं। लेकिन इसमें कहीं भी पिछले जन्म का कोई हाथ नहीं है। पिछले जन्म के किसी पाप के कारण यदि कोई अंधा होता तो वह आँखों के आपरेशन से देखने की क्षमता नहीं हासिल कर सकता था। इसलिये ये पुनर्जन्म वाली बातें जो मूलत: आत्मा पर आधारित है सब ब्राह्मणवादी ढकोसलों के अलावा कुछ नहीं हैं और जाम्भो जी ने इसी मिथ्या विचार को तोड़ा है।

यहाँ एक सत्य घटना का उल्लेख करना चाहूँगा। सन् 1969 में मनुष्य चाँद पर पहुँच गया था। बात 1971-72 की है। मैं उस समय हिसार के डी.एन. कॉलेज के हॉस्टल में रहता था जहाँ साथ के कमरे मे मेरी ही कक्षा का एक विद्यार्थी रहता था जिसका नाम हंस राज था। वह हरियाणा के भिवानी जिले के दूरदराज आँचलिक क्षेत्र में रहने वाला और बहुत प्रतिभाशाली छात्र था। वह एक रूढ़िवादी परिवार से था। हंसराज से बातचीत में जिक्र आ गया कि मनुष्य चाँद पर उतर चुका है। इस पर वह हँसा और विषय बदलने का प्रयास करने लगा। अधिक पूछने पर पता चला कि जब उसने यह बात अपने घर में बुजुर्गों से बताई कि मनुष्य चाँद पर उतर गया है तो उन्होंने मिल कर उसे खूब पीटा। कारण था कि उसने ये कह कर ही चंद्र देवता का अपमान किया था। किसी देवता तक मनुष्य कैसे पहुँच सकता है ?

खैर, एक वह समय था और आगे 2018 में समाचार था कि चीन ने चाँद पर पौधे लगाने आरम्भ कर दिये हैं। पौधे लगाना यानि जीवन की उत्पत्ति करना। अर्थात् चाँद पर पानी भी था। पृथ्वी जैसी ही पृथ्वी तत्त्व था, वायु थी, आकाश था और अग्नि तो सौर मंडल में हर जगह वैसे भी है। फिर भी जीवन नहीं था। ये बात ही सिद्ध करती है कि पंच महाभूत की कल्पना केवल धर्म की अतीत की

कल्पना भर है- उस कल्पना में विज्ञान की प्रगति से अनेक अवधारणायें धराशायी हो गई हैं और विशेषत: सनातन धर्म का द्वैतवाद तो बिल्कुल ही असत्य सिद्ध हुआ है। जहाँ तक जाम्भो जी की विचारधारा की बात है, वह सबदवाणी के अद्वैतवादी सबदों और विचारों तक ही है। शेष सबदवाणी की जो व्याख्यायें साधुओं ने द्वैतवाद के अंतर्गत की है वे सब जाम्भो जी की विचारधारा के विरुद्ध हैं।

जाम्भो जी वस्तुत: मध्ययुगीन भारत के भक्तिकाल के संत कवि थे। उस समय अनेक संत कवि हुए और लगभग सब ने निराकार ईश्वर या अद्वैतवाद का प्रचार किया। अद्वैतवाद और कुछ नहीं है- केवल वही अवधारणा है जो ऊपर अष्टावक्र के श्लोक में बताई गई है कि ईश्वर एक है और केवल वही है, उसके सिवा और कुछ नहीं है और उसी को यदि विज्ञान की नजरों से देखा जाये तो पता चलेगा कि वह केवल ऊर्जा के अलावा कुछ भी नहीं है।

जाम्भो जी ने इसीलिये सबसे पहले सबद में उस युक्ति (गुर) को पहचानने का संदेश आम लोगों को और पुरोहित ब्राह्मणों को भी दिया कि वे कुछ भी प्रचार करने से पहले स्वयं ये जाने कि ईश्वर है क्या ? उस बात को बाद में उन्होंने बताया भी कि ईश्वर अपने आप में केवल है। उसको जन्म देने वाला को नहीं, उसके रक्त और मांस नहीं है, वह मनुष्य जैसा नहीं है जैसा कि मूर्तियों में दिखाया जाता है। इसीलिये वे कहते हैं-

पाते भूला मूळ न खोजो सींचो कॉय कुमूळू?

(13:5-6)

जब तक ईश्वर के मूल को नहीं समझोगे तो पेड़ के पत्तों में ही उलझे रहोगे और गलत जड़ में ही पानी देते रहोगे- अर्थात् मूर्तियों, तीर्थों और साधुओं के डेरों में ही चक्कर काटते रहोगे। जब वे मुसलमानों को डाँटते हैं तो जागरण आदि के लिये हिंदुओं को भी कहते हैं-

'दिल साबति हज काँबो नेडौ, क्या उलबंग पुकारो?'

(8/1-2)

अर्थात् जब सब कुछ ईश्वर ही है तो ये अजान में पुकारने और जागरण में शोर मचाने से क्या लाभ ?

इसीलिये जाम्भो जी किसी प्रकार के कर्मकांड का समर्थन नहीं करते है। वे तो यहाँ तक कहते हैं कि-

'हिरदै नाम विसन का जंपो हाथै करो टबाई' -99

कर्मकांड की बात पर अनेक प्रश्न समाज के वर्तमान क्रियाकलापों पर भी उठते हैं, जिन्हें समय समय पर लिया जाता रहेगा। किंतु उपरोक्त उक्ति का सार यही है जो ऊपर अष्टावक्र गीता में बताया गया है- ईश्वर को पाने का प्रयास करना भी बेवकूफी है। केवल यहीं बात मन में याद रहे कि ईश्वर एक है और उसके अलावा कुछ नहीं है। किसी को पूजने की आवश्यकता नहीं। किसी मंदिर, तीर्थ स्थान और गंगा स्नान में पाप धोने का प्रयास कोरी अज्ञानता है। किसी साधु के पैर धुले दूध की खीर में उसके पैर की गंदगी के अलावा कुछ नहीं रखा है चाहे उसमें कितने ही बड़े नेता आम लोगों को बेवकूफ बनाने के लिये एकत्रित होते हों।

अंत में समाज को जाम्भो जी की एक बात सदा याद रहनी चाहिये कि-

'जुग जागो जुग जाग पिरांणी कांय जागंता सोवौ?'

जाम्भो जी मानव मात्र को हर समय जागृत और शिक्षित रहने का आह्वान करते हैं। किसी तरह के तंत्र, मंत्र, झाड़, फूंक, भूत-प्रेत और साधु के डोरे, तावीज या धूप बत्ती का स्पष्ट निषेध करते हैं। उस प्रयास में उठने वाले हर प्रश्न को सब के सामने रखने और उसका समाधान खोजने के लिये उसके मूल तक जाने का संदेश देते हैं। वे व्यर्थ के आत्मा परमात्मा के चक्कर से आपको बचाते हैं, जन्म मरण में मन की शांति के लिये हृदय में विसन जाप का संदेश देते हैं और हर प्रकार के आडम्बर से बचाने का प्रयास करते हैं।

इस लेख को मेरे पिछले स्वर्ग संबंधित लेख की गहराई में चलते विचार के रूप में देखें और समझें।

यहाँ प्राय: लोगों को भ्रम होता है कि यदि ईश्वर एक है तो सबदवाणी में अनेक जगह अवतारों का उल्लेख क्यों है। ये विषय भी लम्बा है इसलिये इसे फिर कभी चर्चा में लिया जायेगा।

-जे.सी. बिश्नोई
39, एच.ई. डब्ल्यू ओ अपार्टमेंटस
सेक्टर 16ए, फरीदाबाद
मो.: 9899711182

बधाई संदेश

लेफ्टिनेंट कर्नल सौरभ बिश्नोई को मेजर से लेफ्टिनेंट कर्नल के रूप में 13 जून, 2020 को भारतीय थल सेना में पदोन्नत किया गया है। आप गाँव हकीमपुर, जिला मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश के निवासी हैं। आपके पिता जी विंग कमांडर अनिल कुमार सिंह बिश्नोई भारतीय वायु सेना से सेवानिवृत्त हैं। आपके दादाजी स्वर्गीय श्री फूल कुमार सिंह यूपी पुलिस में पीएसी में प्लाटून कमांडर थे।

स्क्वाड्रन लीडर पल्लवी बिश्नोई सुपुत्री विंग कमांडर अनिल कुमार सिंह बिश्नोई (सेवानिवृत्त) को भारतीय वायु सेना में फ्लाइट लेफ्टिनेंट से स्क्वाड्रन लीडर के पद पर पदोन्नत किया गया। आप गाँव हकीमपुर, जिला मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश की निवासी हैं। आपके पिता विंग कमांडर अनिल कुमार सिंह बिश्नोई भारतीय वायु सेना से सेवानिवृत्त हैं।

डॉ. अजीत सिंह सुपुत्र श्री इन्द्र सिंह खिचड़, निवासी सदलपुर, जिला हिसार की नियुक्ति स्वास्थ्य विभाग हरियाणा सरकार के अन्तर्गत चिकित्सा अधिकारी प्रथम श्रेणी के पद पर हुई है।

कर्ण सिंह सुपुत्र श्री भूपसिंह खिचड़, निवासी गांव मोठसरा, जिला हिसार की पदोन्नति राजस्व विभाग हरियाणा में पटवारी से कानूनगो के पद पर हुई है।

इंजि. कुलदीप कड़वासरा सुपुत्र श्री सतपाल कड़वासरा, निवासी गांव सदलपुर, तह. आदमपुर, जिला हिसार की नियुक्ति हाऊसिंग बोर्ड हरियाणा, पंचकूला में कनिष्ठ अभियंता (जे.ई. सिविल) के पद पर हुई है।

इंजि. ललित कुमार सुपुत्र श्री सुभाष लोहमरोड़, निवासी गांव ठरवा, तह. टोहाना, जिला फतेहाबाद का चयन हरियाणा कर्मचारी चयन आयोग द्वारा आयोजित भर्ती के तहत पंचायती राज विभाग में कनिष्ठ अभियन्ता (जे.ई.) के पद पर हुआ है।

इंजि. सुनील कुमार सुपुत्र श्री मालू राम मांझू, आर्य नगर, हिसार (हरियाणा) की नियुक्ति हरियाणा कर्मचारी चयन आयोग द्वारा आयोजित भर्ती के तहत B&R विभाग में कनिष्ठ अभियंता (जे.ई.) के पद पर हुई है।

इंजि. इन्द्रजीत सुपुत्र श्री रामकुमार ज्याणी, निवासी गांव सदलपुर, तह. आदमपुर, जिला हिसार की नियुक्ति हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड, भिवानी में कनिष्ठ अभियन्ता (जे.ई. सिविल) के पद पर हुई है।

आप सभी की इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर बिश्नोई सभा, हिसार व अमर ज्योति पत्रिका परिवार की ओर से हार्दिक बधाई व उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

प्रकृति हुयगी निहाल

इण लॉकडाउन री अबखाई में, मानखो हुयग्यो बैहाल ।
पण बात बताऊँ साची, प्रकृति हुयगी निहाल ।।
जियाजुण री आपाधापी में, मानखो चाले हो कुचाल ।
पण लॉकडाउन री इण अबखी बेळा में, प्रकृति हुयगी निहाल ।।
रूंखड़ा बच्या,कारखाना बंद हुया, गंगा चाले सखरी चाल।
पण लॉकडाउन री इण अबखी बेळा में, प्रकृति हुयगी निहाल।।
मौसम हुयग्यो साफ सुथरो, प्रदूषण रो मिटग्यो जाळ।
लॉकडाउन री इण अबखी बेळा में प्रकृति हुयगी निहाल।।
जीव जिनावर कटणा बंद हुयग्या, चाले बै मदराती चाल।
लॉकडाउन री इण अबखी बेळा में प्रकृति हुयगी निहाल।।
आखो मानखो दुबक्यो बैठो, बारै निकळणे स्यु सरकार दियो पाल।
लॉकडाउन री इण अबखी बेळा में प्रकृति हुयगी निहाल।।
वायु, जळ, ध्वनि प्रदूषण स्यु मुगत हुयो मानखो, पूछे एक दूजे रो हाल।
लॉकडाउन री इण अबखी बेळा में प्रकृति हुयगी निहाल।।
कोरोना री इण महामारी में मानखे रो, आयो है काळ।
लॉकडाउन री इण अबखी बेळा में प्रकृति हुयगी निहाल।।
मानखो डरै, धूजै छुटे कंपकंपी पण, जिनावरा रै लागै ना इणरी लाळ।
लॉकडाउन री इण अबखी बेळा में प्रकृति हुयगी निहाल।।
प्रकृति कैवे इण मानखै ने, म्हारो नास कर रै क्यू तू पाळें पंपाळ।
लॉकडाउन री इण अबखी बेळा में, प्रकृति हुयगी निहाल।।
थूं म्हने पूज हूं थनै फळापु तुं रैवे सुखी सालोसाल।
लॉकडाउन री इण अबखी बेळा में, प्रकृति हुयगी निहाल।।
जाम्भोजी बतायो रूंख ना काटो, जीव ना मारो तो सोरा रैवे थारा हाल।
लॉकडाउन री इण अबखी बेळा में, प्रकृति हुयगी निहाल।
आवो आखड़ी लैवा, रूंख लगावा, चाला आपा सुथरी चाल।
लॉकडाउन री इण अबखी बेळा में, प्रकृति हुयगी निहाल।।

डॉ हरिराम बिश्नोई (पुस्तकालयाध्यक्ष)
राजस्थानी मोट्यार परिषद्, बीकानेर
मो. 8387075909

वर्तमान संदर्भ में जम्भेश्वर वाणी में शिक्षक का बच्चों को संस्कार देने में योगदान

शिक्षक शब्द का शाब्दिक अर्थ है, शिक्षा देने वाला 'गुरु'। हमारे गुरु श्री जम्भेश्वर भगवान तो सात वर्ष की अवस्था तक कोई शब्द ही नहीं बोले और जब बोले तो उन्होंने अपने मुख से पहला शब्द 'गुरु' ही बोला, जैसे 'गुरु चीन्हों गुरु चीन्ह पुरोहित.. आलिंकार पिछाणी' यानि पुरोहित को समझाया कि हे पुरोहित (ब्राह्मण), पहले गुरु की पहचान कर। गुरु के मुख से हमेशा अच्छी शिक्षा एवं धर्म का ही वर्णन होता है। गुरु के आचरण शील, सहज, शुद्ध शब्द, नादे, वेदे ये सब गुरु के अलंकार हैं यानि गुरु या शिक्षक ही सर्वोपरि है। जैसे कबीर जी ने भी कहा है कि 'गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागूं पांय, बलिहारी गुरु आपने जो गोविन्द दिया बताय'। इस प्रकार श्री भगवान से भी गुरु की पूजा पहले करने को बतलाया है क्योंकि गुरु ही ऐसा मार्ग दिखाता है जो ईश्वर से मिला देता है। हमारी शिक्षा का गुण एवं उद्देश्य भी बतलाया गया है कि 'विद्या ददाति विनयम' – विद्या से ही हम विनयपूर्वक व्यवहार करना सीखते हैं। विनय से ही सब कुछ प्राप्त हो सकता है। जैसे द्वापर युग में कौरव एवं पाण्डवों का महायुद्ध हुआ। उसमें कौरवों की सेना 11 अक्षोहिणी एवं पाण्डवों की 7 अक्षोहिणी यानि 11:7 का अनुपात था और कौरवों में बड़े-बड़े महारथी थे जैसे भीष्म पीतामह, गुरु द्रोणाचार्य, गुरु कृपाचार्य, कर्ण व स्वयं दुर्योधन आदि जिनको युद्ध में स्वयं भगवान भी नहीं पराजित कर सकते थे। परन्तु अधर्म एवं अहं भाव के कारण। इस भंयकर युद्ध में पाण्डव विजेता रहे। केवल विजेता भी नहीं, पांचों भाई जीवित भी रहे। कौरवों में कोई भी जीवित नहीं बचा। यह सब विनय एवं धर्म का ही प्रभाव था। गीता में स्वयं श्रीकृष्ण भगवान ने कहा है कि विनय के साथ धर्म है एवं धर्म के साथ स्वयं मैं हूँ और जहां मैं धर्म के साथ खड़ा हूं वहां विजय है। इस प्रकार हमारे शास्त्रों के अनुसार अच्छा शिक्षक वहीं है जो अपने शिष्यों में सदाचार के द्वारा विनय एवं धर्म की भावना का विकास करें।

मैं स्वयं मेरा ही उदाहरण देता हूँ कि जब मेरी आयु केवल 12 वर्ष थी, उस समय मेरे बहनोई जो मुझ से 15–16 वर्ष बड़े थे और उनका आचरण ऐसा था कि वे शराब, बीड़ी, जुआ एवं गुण्डागर्दी आदि के कर्म ही करते थे। परन्तु उन्होंने मुझे ''गीता'' लाकर दी और कहा– कृष्ण, तूं रोज सुबह स्नान करके एक पाठ गीता का पढ़कर ही नाश्ता, भोजन आदि करना। इसमें मेरी मां जो कि प्रथम गुरु होती है, ने बड़ा सहयोग दिया और ऐसी सख्ती से शिक्षा दी कि जब तक तुम स्नान नहीं करोगे तब तक मैं तुम्हें खाने–पीने को कुछ नहीं दूंगी। इसमें मेरे पिता जी ने भी पूरा सहयोग दिया और उसी की वजह से आज 78 वर्ष की आयु तक भी मैं स्नान करके गीता का अध्याय पढ़कर ही मैं खाना–पीना करता हूँ और जीवन के हर क्षेत्र में मुझे सफलता ही मिली है।

मेरे 40 वर्ष के शिक्षक काल में मैं चाहे प्राथमिक विद्यालय या उच्च प्राथमिक विद्यालय में रहा, 1–2 साल छोड़कर प्रधानाध्यापक पद पर ही रहा। मेरे शिक्षक काल में मेरे विद्यालय में यह नियम था कि कोई भी छात्र बिना स्नान किए शाला में नहीं आएगा। शाला में कोई भी छात्र असत्य नहीं बोलेगा एवं न ही कोई नशा पत्ता करेगा तथा न परीक्षा में कोई नकल करेगा। ये 4 बातें मेरे विद्यालय में आवश्यक रूप से लागू होती थी। इसमें अगर किसी गांव में कोई विरोध

हुआ तो हमने धैर्यपूर्वक उसका निराकरण कर दिया और मुझे मेरे शिक्षक काल में पूर्ण संतुष्टि रही कि मेरे शिष्यों में ये गुण विद्यमान रहे। इसका मुख्य कारण यही है कि विद्यार्थी वही गुण सीखता है जो उसके गुरु में होते हैं। शिक्षक का समाज में अलग ही स्थान है। वह पूरे समाज के लिए आदर्श है।

गुरु जाम्भोजी द्वारा बतलाए गए 29 नियमों में मैं उक्त तीन (3) नियमों को विशेष मानता हूं और जो इन तीन नियमों का पालन करेगा वह आसानी से 29 नियमों का पालन करते हुए वह विश्व के शुद्ध पर्यावरण में सहयोग देते हुए अपना जीवन शुद्ध स्वरूप से जी सकेगा। श्री गुरु जाम्भोजी द्वारा बतलाए गए 29 नियम जो हमें आज से 550 वर्ष पहले बतलाए थे। वे आज के समय में विशेष रूप से प्रासंगिक हैं। हमारा समाज आज 29 नियमों के कारण ही 'विश्वगुरु' कहलाता है इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं है।

गुरु का स्वयं का आचरण अच्छा नहीं है और वह अच्छी शिक्षा देता है तो भी बच्चों पर उसका वास्तविक असर नहीं होगा। इसका एक उदाहरण बतलाता हूँ। जब कुरुक्षेत्र में भीष्म पितामह शरशैय्या पर थे उस समय भगवान श्रीकृष्ण पाण्डवों को भीष्म पितामह के पास राजनैतिक एवं नैतिक शिक्षा ग्रहण करने के लिए ले गए। तब भीष्म पितामह ने कहा कि कोई भी मनुष्य अगर सामर्थ्यवान होते हुए भी अधर्म होते हुए अपनी आंखों से देखता है और उसका विरोध नहीं करता है तो भी उस अधर्म में सहायक माना जाता है और पाप का भागी होता है। यह सुनकर द्रोपदी को हंसी आ गई तब भीष्म पितामह ने हंसने का कारण पूछा तो पहले तो द्रोपदी ने संकोचवश कुछ नहीं बतलाया पर ज्यादा पूछने पर कहा कि पितामह मेरे चीर हरण के समय आप भी सभा में उपस्थित थे और आप सामर्थ्यवान होते हुए भी अन्याय को देखते रहे। मैंने आपसे रक्षा की भीख भी मांगी थी, परन्तु आपने आंखे बन्द कर ली। इसका कारण भीष्म पितामह ने बतलाया कि मैं दुर्योधन का अन्न खाता था, इसलिए मैं सहायता नहीं कर सका। परन्तु यह उत्तर उचित नहीं है मैं ऐसा मानता हूँ। क्योंकि आज भी हमारे समाज के बहुत से लोग वृक्षों एवं वन्य जीवों की रक्षा करते हुए अपने प्राणों को न्यौछावर कर चुके हैं। मैं तो उन लोगों का जीवन उत्तम मानता हूँ जो समाज के सत्य, धर्म और अच्छाई के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दे। उन्हीं का जीवन सफल होता है। शिक्षा देने का अधिकार केवल उन्हें ही है जो स्वयं उस शिक्षा पर खरे उतरते हों। इसलिए ही शिक्षा संस्थान समाज में सर्वोपरि हैं।

गुरु की महत्ता है कि वह सत्यवादी हो और एक अच्छा न्यायाधीश भी हो। अगर गुरु सही न्याय नहीं करता है तो बच्चों एवं समाज में उदण्डता आ ही जाएगी। जैसे आज के वर्तमान समय में पूरे देश एवं समाज में राष्ट्र चरित्र का हनन हुआ है। उसमें हमारे देश के कर्णधार एवं शिक्षक भी काफी हद तक जिम्मेवार हैं। हमारी शिक्षा में राष्ट्र चरित्र का भी ज्यादा से ज्यादा समावेश होना चाहिए ताकि देश में अच्छे नागरिक उत्पन्न हों और देश का विकास हो सके। जैसे गीता में श्रीकृष्ण भगवान ने कहा है कि मुझे इस संसार में कुछ भी प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं है परन्तु फिर भी अगर मैं कर्म न करूं तो अन्य लोग भी मुझे देखकर कर्म नहीं करेंगे और कर्म न करने से संसार का विनाश हो जाएगा जैसे आज भारत में हो रहा है। हर कोई बिना परिश्रम के ज्यादा से ज्यादा आवश्यकताएं पूरी करना चाहता है। इससे राष्ट्र का विकास नहीं विनाश ही होगा। हमें हमारे भारतवर्ष को वहीं ले जाना होगा जहां भारतवर्ष विश्व का गुरु कहलाता था और यह कार्य शिक्षक एवं देश के कर्णधार ही कर सकते हैं।

गुरु महाराज के शब्द में लिखा है कि '**घड़े औंधे बरसत बहु मेहा तिहिं में पड्यो न पड़सी**

पाणी। ' इसका अर्थ हर कोई समझ सकता है कि उल्टे घड़े में पानी नहीं पड़ सकता। परन्तु अगर कृष्ण भगवान की कृपा हो तो हमारी बुद्धि सही हो जाएगी और उसमें ज्ञान रूपी पानी आ सकेगा। यह काम भी शिक्षक एवं देश के कर्णधार ही कर सकते हैं। अगर आचार-विचार सही नहीं है तो हमें ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती।

अत: शिक्षक का स्थान समाज में सर्वोपरि है। शिक्षकों को समाज में आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए। जो अवगुण गुरु में हैं, वे उनके शिष्यों में आवश्यक रूप से भी आ जाएंगे। क्योंकि बालक देखकर बहुत कुछ सीखता है। हमारे यहां तो शास्त्रों में मान्यता है कि बालक गर्भावस्था में भी सबसे बड़े गुरु 'माँ' के आचरण से बहुत कुछ सीखता है जैसे भक्त प्रह्लाद एवं अभिमन्यु ने अपनी माँ के गर्भावस्था में ही भक्ति एवं चक्रव्यूह भेदन सीख लिया था। इस प्रकार भारत एवं संसार में बच्चों को अगर संस्कारवान बनाना है और अच्छे नागरिक बनाने हैं तो गर्भावस्था से लेकर शिक्षालयों में गुरुओं से ही यह सम्भव है। परन्तु समाज भी शिक्षकों एवं गुरुओं के साथ सहयोग करें ताकि हम समाज में अच्छे नागरिक बनाने में सहयोग कर सकें।

-श्री कृष्ण बिश्नोई
से.नि. प्रधानाध्यापक
गांव मुकलावा, त. रायसिंह नगर
जिला श्रीगंगानगर (राज.)

नशे की बेड़ियों में उलझता समाज

बड़े दु:ख और चिंता के साथ लिखना पड़ रहा है कि जिस समाज को पर्यावरण प्रेमी और नशा नहीं करने पर दूसरे समाज अपनी प्रेरणा का स्रोत मानते थे वो ही समाज आज नशे की बेड़ियों में पूरी तरह से उलझ चुका है और समय रहते नहीं चेते तो परिणाम बड़ा भयावह होगा।

आज बिश्नोई समाज के युवा, जवान और बुजुर्ग पोस्त जैसे भंयकर नशे में बुरी तरीके से फंस चुके हैं।

दूसरी तरफ समाज के कई युवा जल्दी अमीर बनने के चक्कर में पोस्त, शराब, स्मैक बेचने के धंधे मे पड़ चुके है। वो इस धंधे में इस कद्र अंधे हो गये है कि उन्हें नहीं पता जो नशा आप बेच रहे हो, उससे समाज का ही एक व्यक्ति नशा करता है और कमजोर हो रहा है। उसको हार्ट, लीवर, किडनी, श्वांस जैसी गंभीर बीमारियां लग रही है। तस्करों के दिये गये नशे से समाज का एक व्यक्ति कमजोर होता है जिससे उसका परिवार और फिर समाज धीरे-धीरे कमजोर हो रहे है।

जिस बिश्नोई समाज के गांव में किसी समय आस-पास भी नशा करना और बेचना एक गंभीर अपराध माना जाता था, उसमें आज की ताजा स्थिति ये है कि बिश्नोई गांवों में डोडा पोस्त खुलेआम बिक रहा है।

समाज के गणमान्य नागरिकों से मेरा कहना है कि नशे के इस व्यापार पर और नशा करने वालों पर समाज का संयुक्त एक्शन नहीं हुआ तो जांभोजी महाराज का ये पवित्र समाज कमजोर पड़ जायेगा और आने वाली युवा पीढ़ी को इस कृत्य के गंभीर परिणाम भुगतने पड़ेंगे।

-प्रेम पूनियां
थला की ढाणी रेन
जिला नागौर (राजस्थान)
मो. 9460578406

संत वील्होजी के काव्य में संवेदनशीलता

भारत भूमि सदियों से महापुरुषों की तपोस्थली रही है। यहाँ का कण-कण संतों की गौरव गाथा का गान कर रहा है। संतों ने आमजन के जीवन को अध्यात्म से जोड़ा। जब-जब लोग अपने पथ से विचलित होने लगे संतों ने उस दौर में अपनी वाणी से लोगों को पथ भ्रष्ट होने से बचा लिया।

देश में राजस्थान की धरती संतों और वीरों की धरती कही जाती है। इसी मरुभूमि में गुरु जाम्भोजी का प्रादुर्भाव उस वक्त हुआ जब लोग आडम्बरों में जकड़े जा रहे थे। धर्म के नाम पर भ्रमित किये जा रहे थे। मानवीय मूल्यों का ह्रास बेतहाशा जारी था। ऐसे में गुरु महाराज ने अपने पवित्र कर्मों से, शब्दों के माध्यम से, उपदेशों से मरुस्थल की जनता को सत्य का पथ दिखाया।

जाम्भोजी के मत का प्रचार-प्रसार करने वाले महान भक्त कवि हुए वील्होजी। वील्होजी किसी परिचय के मोहताज नहीं है। या यूँ कहूँ कि हिंदी साहित्य जगत के दैदीप्यमान नक्षत्र गोस्वामी तुलसीदास जी है उसी भांति जाम्भाणी साहित्य में संत वील्होजी है। वील्होजी की लिखी साखियाँ और हरजस से न केवल जाम्भाणी साहित्य अपितु राजस्थानी साहित्य भी समृद्ध हुआ है। राजस्थान के लोक जीवन में वील्होजी की रचनाएं बड़े चाव से गाई जाती है।

वील्होजी का काव्य इतनी व्यापकता लिए हुए है कि उसे चंद शब्दों में बांधना सम्भव नहीं है। वील्होजी के काव्य में वृक्षों के लिए, जीवों के लिए और प्रकृति के हर रूप के लिए इतनी संवेदना भरी हुई है जिसे पाठक सहज ही महसूस कर लेता है। उनकी हर बात मार्मिक है। वील्होजी का साहित्य हृदय की तह को छू लेता है। वील्होजी बेहद संवेदनशील कवि थे। जाम्भोजी को जितनी इस धरती की फिक्र थी उतनी ही वील्होजी को भी थी। वील्होजी का काव्य इस बात का गवाह है कि हरे वृक्षों पर कोई आंच आती तो वील्होजी सिहर जाते थे। जीवों पर अत्याचार होते देखकर वील्होजी के रोंगटे खड़े हो जाते थे। समाज में , मानव जीवन में बढ़ रहे आडम्बरों पर वील्होजी ने शब्दों के माध्यम से करारी चोट की। कबीरदास जी ने कहा था 'तू कहता कागद की लेखी, मैं कहता आंखन की देखी।' उसी भांति वील्होजी के काव्य की बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने जो देखा और महसूस किया उसे लिख डाला। कबीर की तरह खरी-खरी कहने का साहस भी वील्होजी में है। लेकिन उनकी हर बात संवेदना से परिपूर्ण है जो पाठक को सहज ही प्रभावित करती है। वील्होजी का साहित्य इस दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है कि उन्होंने जातिगत भेदभाव का खंडन किया। वील्होजी लिखते हैं- **'जाति पांति पूछे न कोई, हरि को भजे सो हरि को होई'**। उन्होंने मनुष्य के गुणों को महत्व दिया न कि जाति को। जाम्भोजी ने भी कहा था 'उत्तम कुली का उत्तम न होयबा'। उसी भावना को आगे ले जाते हुए भी वील्होजी ने शुद्ध कर्म को मुक्ति का मार्ग बताया।

अन्य संतों की भांति वील्होजी ने भी दया को धर्म का मूल आधार बताया। कथा ग्यानचरी के एक दोहे में वील्होजी लिखते हैं-

बोहा विधि धरम करे संसार, जीव दया विन्य सम इक्यार।
दया दया सोह कोई कहै, दया भेद कोई न्यानी लहै।[1]

अर्थात् संसार में अनेक धर्म है परन्तु जीवों पर दया के बिना सब व्यर्थ है। दया का नाम तो सब लेते है लेकिन दया का भेद कोई बिरला ही जानता है।

वील्होजी जैसे महापुरुष इस धरती पर अवतरित हुए और लोगों को धर्म का मर्म बताया। वो दृष्टि किसी संत कवि की ही हो सकती है जिन्हें जीवों की इतनी फिक्र हो। सूक्ष्म जीव जो दिखाई भी नहीं देते है वील्होजी को उनकी कितनी फिक्र थी, इस दोहे में उनकी संवेदनशीलता देखें-

अणछाणयो पांणी वावरै,अवही पाप अनंत करे अभष भषियो व बुध्यनास, मुंवा पछे दोरमां वास।[2]

बिना छाने हुए जल का प्रयोग करने से अनेक जीवों की हत्या होती है। इस पाप का कोई अंत नहीं है जो मनुष्य अपना उत्तम खाद्य पदार्थ छोड़कर मांस का भक्षण करता है उसकी बुद्धि नष्ट होती है, मरने पर नरक में जाता है।

उक्त दोहे में वील्होजी ने जीव दया के साथ-साथ हमारे स्वास्थ्य की बात भी की है। आज जबकि स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानियों से पूरा विश्व चिंतित है लेकिन वील्होजी ने वर्षों पहले स्वास्थ्य रक्षा के गूढ़ सूत्र दे दिए। वील्होजी ने उन लोगों को गिरा हुआ बताया जो बहुत से स्वादिष्ट खाद्य पदार्थों के होते हुए भी जीव हत्या कर मांस का सेवन करते है। वील्होजी को ऐसे लोगों के लिए सिर्फ नरक का ही रास्ता दिखाई देता है।

वील्होजी की सूक्ष्म दृष्टि की एक और बानगी इस दोहे में देखें-

मही विलोक्य घीरत संग्रहे, सवा घड़ी रस बाहरि रहै। ता उपरान्ते तावणय करै, अनंत जीव उपजे अर मरे।[3]

दही को बिलोकर घी संग्रह करना, उसे बिना ढके छोड़ना और काफी देर तक तपाना इसमें अनेक जीव उत्पन्न होकर मरते हैं।

वील्होजी की रचनाएं पढ़कर लगता है कि उन्हें प्रकृति के हर रूप से बेहद लगाव था। धरती माँ और धरती के श्रृंगार पेड़-पौधों से उन्हें अकूत प्यार था। पर्यावरण प्रदूषण से आज पूरी दुनिया बेहाल है। पूरा विश्व इससे जूझ रहा है। प्रदूषण मुक्ति हेतु प्रयास भी किये जा रहे है लेकिन सब निष्फल। आखिर क्यों? क्योंकि आम नागरिक धरती को बचाने हेतु संवेदनशील नहीं है। हमें चाहिए संत कवि वील्होजी जैसी संवेदनशीलता। गुरु जाम्भोजी और वील्होजी की वाणी का ही प्रभाव है कि आज के दौर में भी मरुस्थल की धरती के लोग जीवों से, वृक्षों से बेइंतिहा मोहब्बत करते है। यह भारतीय परम्परा ही है जहाँ हर सुबह शाम घर के आगे पक्षियों को चुग्गा-पानी डालने की परम्परा है। मरुस्थल की धरा जहाँ बिश्नोई निवास करते हैं आज भी हिरण और मोर आजाद घूमते है। तरस आता है उन लोगों पर जो जीवों के दुश्मन बन जाते है। लेकिन बिश्नोइयों के देखते कोई जीव हत्या करे यह भला कहाँ संभव? बिश्नोइयों के इलाके में कोई हरे वृक्षों पर कुल्हाड़ी चलाये, यह कहाँ संभव? वृक्ष बचाने का खेजड़ली के शहीदों से बड़ा उदाहरण और क्या हो सकता है? समूचा विश्व अचंभित है इस बलिदान से। क्योंकि उन लोगों ने वील्होजी को पढ़ा, गुरु महाराज के वचनों का पालन किया। निश्चय ही गौरव होता है वील्होजी जैसे संत कवि का साहित्य पढ़कर।

'साखी छंदा री' में वे कहते हैं-

गुरु फुरमाई षान्डा धार, औसर आयो सारिये। आपणडो जीव कबूल, पर जीव उबारिये। उबारिये जीव जीव काजे, राषि सधीरो हीयो। रोषा उपरि मरण मातो कीजे ज्यू करमणी कीयो। करणी पालि उजालि सतपंथ, प्रेम ज्योति पाइयो।[4]

अर्थात् गुरु महाराज ने खांडे की धार वाला यह पंथ बताया है। अवसर आने पर दूसरे जीवों की रक्षा के लिए अपने प्राण दे देने चाहिए। अपने हृदय में धैर्य धारण करते हुए दूसरे जीवों को बचाइये। वृक्षों की रक्षा हेतु मरना चाहिए जैसे करमणी ने अपना बलिदान किया। उसने अच्छी करनी करके इस सतपंथ को उज्ज्वल किया। इससे उसे परम ज्योति मिली। उसने जीवों की रक्षार्थ प्राण दिए और गुरु की आज्ञा मानी।

गुरु जाम्भोजी की असीम कृपा और वील्होजी जैसे संत कवि के शब्दों का आलोक जहाँ हो, वहां जीवों की रक्षा हेतु कोई तैयार न हो ऐसा भला कैसे हो सकता है? बिश्नोई समाज आज विश्व पटल पर इस नाते भी अपनी पहचान रखता है कि यहाँ जीवों के लिए मनुष्य अपनी जान दे देता है। वील्होजी की प्रेरणा जहाँ हो वहां भला जीवो को मरने कैसे दिया जायेगा।

सचमुच फख्र होता है ऐसे समाज पर जहां लोग अपने स्वार्थ को किनारे रखकर वृक्षों और वन्य जीवों की खातिर कुर्बानी देते हैं। कौन सोचता है आज की भागती-दौड़ती जिंदगी में उनके लिए जो बोल नहीं सकते। जो अपनी तकलीफ बता नहीं सकते, लेकिन उनकी पीड़ा समझने वाले लोग भी इस धरती पर हैं। जीवन में भौतिक सुविधाओं की कमी नहीं है लेकिन शांति की कमी है। क्यों ? क्योंकि लोग प्रकृति से टूट चुके है। वील्होजी ने कहा था प्रकृति से अलग होकर शांति की तलाश कभी पूर्ण हो ही नहीं सकती।

वील्होजी मानवीय करुणा को सभी समस्याओं का हल बताते हैं, और कहते हैं कि जिसमें करुणा नहीं, जो जीवों को सताता है वह नरक में जाता है। जो वृक्षों का हत्यारा है वह नरक की यातना झेलेगा। **'रून्षा तणी नै पाले दया, वाढे वनी कुम्भी भे पया'** यानी जो हरे वृक्षों पर दया नहीं करता है उसे कुम्भी पाक नरक भोगना पड़ेगा। उसके लिए तो यह जीवन ही नरक है जो दया का भाव नहीं रखता, जो जीव हत्यारा है। जो अपना उदर भरने के लिए जीवों की हत्या करता है। जाम्भोजी ने कहा था 'जीवां ऊपर जोर करीजे अन्तकाल होयसी भारी।' इसी प्रेरणा से वील्होजी लिखते हैं-

परथम्य पाप बालपण्य कीया नन्हा जीव बोह दुष दीया दया धरम न जाणयो भेव वाल्ली सुरती ने जाणयो देव।[4]

अर्थात् हे प्राणी ! सर्वप्रथम तो तूने बचपन में पाप किये और छोटे-छोटे जीवों को दु:ख दिया। तुमने तो सुन्दरता को देव माना, परन्तु दया धर्म का मूल है यह तुमने नहीं जाना।

वील्होजी तमाम आडम्बरों का विरोध करते हुए दया को ही धर्म का आधार बताते हैं। आज जब भाई-भाई का दुश्मन हो रहा है। लड़ाई-झगड़े बढ़ते जा रहे हैं। छल-कपट आम हो गया है। ऐसे में मानवीय करुणा ही इन समस्याओं का एकमात्र हल है। युद्ध और वैर- वैमनस्य का कारण भी यही है की लोगों की आँखों में करुणा का पानी मर गया है। जिनमें दया का भाव नहीं है वे धर्म का मर्म नहीं समझते। वील्होजी कहते हैं कि वही झुक सकता है जो करुणा से भरा है।

तुलसी, सूर, मीरा, कबीर आदि सब संतों का भी एक ही सन्देश था करुणा। इसी संत परम्परा के वील्होजी है। गुरु महाराज के उपदेशों को जन-जन तक पहुँचाने में वील्होजी का सबसे महत्वपूर्ण योगदान है। जाम्भोजी ऐसे समय आये जब जीव मारे जा रहे थे। लोग आडम्बरों के आदी हो चुके थे। वे दया को भूल ही गये। ऐसे समय में लोगों की सोई हुई चेतना को जाम्भोजी ने जगाया। वील्होजी जाम्भोजी के अवतार का हेतु कुछ इस तरह बताते है-

जीव मरता राखीया, पाप न सक्यो पोहि, सतगुरु आयो किम जाणिये, जे उपगार न होई।[5]

जाम्भोजी ने जीवों को मरने से बचा लिया, क्योंकि वे पापों को सहन नहीं कर सकते थे। उनके आने की यही पहचान है कि वहां उपकार होने लगे।

वील्होजी ने कितनी मार्मिक बात लिखी कि जाम्भोजी जीवों की हत्या को सहन नहीं कर सकते थे। पापों को सहन नहीं कर सकते थे। यही महापुरुषों की खूबी है कि उन्हें अन्याय और अत्याचार कभी सहनीय नहीं होता। जाम्भोजी के समय जब पाप बढ़ रहा था। चंहु ओर जीवों की हिंसा व्याप्त थी। जाम्भोजी ने अपने उपदेशों में लोगों को अहिंसा का पाठ पढ़ाया। नैतिक मूल्यों की स्थापना की। लोगों को धर्म का अर्थ ज्ञात हुआ। जाम्भोजी ने लोगों को धर्म का मर्म बताया। उसे वील्होजी ने आगे बढ़ाया। नैतिक मूल्यों की माला जो जाम्भोजी ने बनानी शुरू की थी, उसे वील्होजी ने कुछ और मनके पिरोकर पूरा किया। लोगों को परोपकार की ओर मोड़ा। वील्होजी बताते हैं कि किन बातों से परमात्मा प्रसन्न होते हैं-

भूखे ने भोजन दिया, जाणी भगवंत जीमायो। तिसिये जण ने जळ दियो, जाणे आप ने पायो। उघाड़े ने पंगारण दियो, जाणी पारब्रह्म उढाइयो।

निरधन ने धन दियो, जाणी आप मानि भायो। आदू आणन मेटीये, वायक मेटी न जाइये। वील्ह कहे भगवंत को इणी विधि भलो मनाइये।[6]

भाव यह है कि भूखे को भोजन दिया, मानो भगवान को जिमाया। प्यासे को जल पिलाया, मानो भगवान को पिलाया। नग्न को वस्त्र दिया मानो पारब्रह्म को उढ़ाया। पुरानी मर्यादा को नष्ट नहीं करना चाहिए और दिए वचनों को भंग नहीं करना चाहिए। कवि वील्होजी कहते है कि भगवान इन बातों से प्रसन्न होते हैं।

वील्होजी के काव्य में संवेदना का पक्ष इतना मजबूत है कि पाठक अनायास ही भावनाओं में बह जाता है। वील्होजी कहते है कि अग्नि में कोई भी जीव -जन्तु नहीं पड़ना चाहिए। इससे अग्नि अशुद्ध होती है।

थनों से बिना धोये दूध नहीं निकालना चाहिए और पृथ्वी पर ज्यादा यात्रा नहीं करनी चाहिए। इन कार्यों से जीव हत्या होती है।

वील्होजी जितने वृक्षों और जीवों के प्रति संवेदनशील थे, उतने ही मानवीय रिश्तों के प्रति भी। रिश्तों की तार-तार होती मर्यादा को देखकर वील्होजी लिखते हैं-

करि कलोभ कन्या द्रब लीयो, इधको ले अर घटतो दीयो।

दयाहीण काटे वणराय, जीव असंष दडया दूंहलाय।[7]

हे प्राणी! तूने अति लोभी होकर कन्या को बेचा, लेते समय ज्यादा लिया और देते समय बहुत कम दिया। निर्दयी होकर हरे वृक्षों को काटा। असंख्य जीवों को दुह्लायकर नष्ट किया। इसके आगे वील्होजी लिखते है कि उस जीव को छुटकारा नहीं मिलता जिसने जंगल के जानवरों को फंसाने के लिए जाल बिछाया था और जीवों की हत्या की थी।

आज एक बार फिर मनुष्य धर्म के मर्म को भूल रहा है। धर्म की व्यावहारिकता से दूर होता जा रहा है। आधुनिकता के आगोश में समाता चला जा रहा है। मन की शांति नष्ट होती जा रही है। प्रकृति से दूरियां बढ़ती जा रही है। जीवों के प्रति लगाव कम होता जा रहा है। मर्यादा की डोर टूटती जा रही है। रिश्तों में दरारें दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। सहनशीलता गुजरे जमाने की बात हो गयी है। द्वेष-दुर्भावना ने मानव मन पर कब्जा कर लिया है। ऐसे दौर में वील्होजी की वाणी हमें कह रही है कि आओ! जरा रुककर सोचें कि हम कहाँ जा रहे हैं। वील्होजी की वाणी हमें भीतर की यात्रा कराती है। ऐसी यात्रा जिसकी आज के युग में सख्त जरूरत है। ऐसी यात्रा जहाँ केवल अपने लिए ही नहीं दूसरों के लिए भी जीने की प्रेरणा है। जहाँ सुकून है, जहाँ रंग है इस धरती के जो कभी फीके नहीं पड़ते। जहाँ पक्षियों की चहचहाट है जो अकेलेपन को एक पल में आबाद कर देती है।

ऐसे महान संत कवि वील्होजी को हजार बार नमन है, जिन्होंने जाम्भोजी की वाणी को समझा और जाना। जाम्भोजी के आदेश को माना और अपनी शब्द साधना से जाम्भाणी साहित्य को, राजस्थानी साहित्य को उपकृत किया। भारतीय संत परम्परा को अपनी वाणी से समृद्ध किया। सभी भेदभावों का खंडन करते हुए लोगों को धर्म का मर्म बताया। मानवीय संवेदना के बिना जीवन को व्यर्थ बताया। प्रकृति, जीवों और सृष्टि के कण-कण के प्रति संवेदनशीलता वील्होजी के काव्य में कूट-कूट कर भरी हुई है।

सन्दर्भ टिप्पणियाँ-

1. कथा ग्यानचरी - वील्होजी- दोहा 15
2. कथा ग्यानचरी - वील्होजी- दोहा 19
3. कथा ग्यानचरी वील्होजी - दोहा 20
4. साखी छंदा री वील्होजी -4
5. कथा जैसलमेर की वील्होजी
6. वील्होजी का परमोध रूपी छपइया
7. कथा ग्यानचरी-वील्होजी

-चंद्रभान बिश्नोई, शोधार्थी

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

E-mail: chandrabhanbishnoi25@gmail.com

उदोजी कृत 'ग्रभ चेतावणी' : मानवीय मूल्यों के सन्दर्भ में

आज का मनुष्य भी आत्मश्लाघा के वशीभूत होकर और स्वार्थ के पथ पर निरंतर अग्रसर होकर आत्मकेंद्रित होता जा रहा है। वो परोपकार रूपी मानव मूल्य को भूलकर केवल मात्र अपनी स्वार्थ सिद्धि में लगा रहता है और अंत में यही उसके पतन का कारण बनता जाता है। हम जाम्भाणी साहित्य में वर्णित आदर्शों को जन-जन तक पहुँचाकर वर्तमान के पतितोन्मुख जनमानस को सही रास्ते पर लाने का प्रयास कर सकते हैं। 'पोथो ग्रन्थ ज्ञान' में उदोजी द्वारा रचित 'गर्भ चेतावणी' में जो आदर्शोन्मुख बातें बताई गई हैं, उसमें वर्तमान का वह राह भटकता और कर्तव्य विमुख होता इंसान दिखता है, जिसने अपना सम्पूर्ण जीवन व्यर्थ में गवां दिया। यहाँ मनुष्य जाति के विकास का इतना सूक्ष्म वर्णन है कि यदि इसे जीवन में उतार लिया जाए तो मनुष्य होने की सार्थकता सिद्ध हो सकती है। उदाहरण द्रष्टव्य है-

गरब कहा रे गीवार, तु जल बुदबुदा के वार।

ग्रभ गंजन भगवान, मारे बड़ बड़ा के मान।

इस गर्भ चेतावनी में जीवन का सार निहित है और गर्भवास से लेकर निर्वाण तक का ऐसा सजीव वर्णन किया है कि आप वर्तमान जीवन से उसको सीधा तुलनीय मान सकते हैं। एक कवि की ऐसी दृष्टि कम ही देखने को मिलती है जो जन्म होने पर लिखता है कि जिस कारण ईश्वर ने तुझे जन्म दिया अथवा जो वादे तूने गर्भवास में ईश्वर से किए थे, वो सारे इस संसार में जन्म लेते ही तथा सांसारिक हवा लगने पर तू भूल गया। उदाहरण देखिए-

लियो जनम नर संसार, लगो जगत को बयार।

जे नर कीया हरि सुं कोल, भूलो ग्रभ का सब बोल॥

इस प्रकार वह बचपन में बड़े ही चाव और उत्साह से अपना जीवन व्यतीत करता है और घर में मंगल गीत गाए जाते हैं, लेकिन जैसे ही युवावस्था आती है और बाहर निकलना शुरू होता है तो उसमें घमंड, अहंकार, सुन्दर दीखने की चाह, कुसंगत आदि का असर होने लगता है तथा वह कपटता पूर्ण व्यवहार करने लगता है। साथ ही अपने माता-पिता की आज्ञा नहीं मानता और बड़े-बुजुर्गों का आदर-सम्मान करना छोड़ देता है। उदोजी लिखते हैं-

कामीं कपट सुं खेलै, बुढा बड़ा कुं पैलै।

मात पिता नहीं जानै, दीन्हीं सीख नहीं मांनै॥

इसी बात को वील्होजी ने भी अपनी वाणी में कुछ उदाहरणों के माध्यम से मनुष्य को चेतावनी दी है तथा उसकी जवानी के कुकर्मों का वर्णन करते हुए लिखा है कि-

हुवो जवानी जोबन वेस, नैं सुण्या सतगुरु का उपदेस।

आठ मदमातौ अग्यान, किनक कांमणी लायो मान॥

हे प्राणी, जब तूं जवान हुआ तो सतगुरु का उपदेश ग्रहण नहीं किया। आठ प्रकार के मैथुन से तुम्हें अज्ञानता हुई। स्वर्ण और स्त्री में मन को लगाया।

अब जब बड़ा हो जाता है तो नशे की लत भी लग जाती है और परनिंदा का सहारा भी लेने लग जाता है। फिर सांसारिकता की ऐसी हवा लग जाती है कि मनुष्य अपने गुरु, साधु पुरुष अथवा घरवालों का कोई कहना नहीं मानता। कवि चेतावनी देते हुए कहता है कि यह गलत रास्ता है। तू ईश्वर से किए गए वायदे को भूल गया है और कुमार्ग पर चल रहा है। अभी भी समय है सुधर जा, लेकिन वह नहीं मानता। कवि फिर कहता है-

चुकै काहे नर अवसान, सींवरे कांय नी भगवान।

जोवन जोर है दिन च्यार, तामै भूल मत गीवार॥

इस प्रकार सांसारिक माया, लोभ, क्रोध, मद आदि में मनुष्य रत रहता है और ईश्वर को याद नहीं करता तथा भौतिकवाद में डूबा हुआ, अहंकार में मस्त रहता है और उसे पता ही नहीं चलता तथा बुढ़ापा घेर लेता है। अब उसकी ऐसी हालत होती है कि वह मन ही मन दु:खी रहने लगता है और तब जाके उसे पता चलता है कि जीवन तो निकल गया और उसने कुछ भला कार्य तो किया ही नहीं। अपना सारा जीवन सांसारिकता में व्यर्थ ही होम देने के बाद वृद्धावस्था आने पर व्यक्ति की क्या दशा हो जाती है देखिए-

इस विध बुढ़ापा आय, सुत वित बंध्यो मन माय।
चिंता करण आब लागौ, घर को काम सब भागौ॥

अब उसे अपने आप पर क्रोध आता है, खीझ होती है, उसका घर में बस नहीं चलता और कोई उसके नजदीक नहीं आता है। वह पछतावा करने लग जाता है और इस फिक्र में लग जाता है कि इस संसार में अब मेरा कोई नहीं है और यही संसार की रीत है। जब आपने किसी का भला नहीं किया तो अब आपके हाथ केवल पछतावा ही रहेगा।

परबस दु:ख बहु पावै, नेड़ो कोय नहीं आवै।
पिछताय सीस कर धुनै, जुग मैं मेरो अब कौनै॥

जीवन की इसी क्षणभंगुरता का वर्णन करते हुए कवि कहते हैं कि-

उधव ओसर बिचगौ, चेत्यो नहीं गिवार।
सुक्रत कीयो न हरि भज्यौ, गयौ जमवारो हार॥

अब इस प्रकार मनुष्य का अंतकाल नजदीक आ जाता है और घरवाले उस शरीर को अग्नि के हवाले कर देते हैं अथवा जमीन में गाढ़ देते हैं और यह मनुष्य जीवन समाप्त हो जाता है। कवि कहते हैं-

घर का धाह दे चाल्या, तंन कुं अग्नै मै जाल्या।
कै लै घोर में दीन्हा, लोकाचार सब कीन्हा॥

गर्भ चेतावनी के अंत में कवि उदोजी मनुष्य को चेतावनी देते हुए कहते हैं कि इस संसार में दु:खों का कोई पार नहीं है। परन्तु यह मनुष्य जीवन बार-बार मिलने वाला नहीं है। ईश्वर की कृपा से यह मनुष्य शरीर मिलता है और गुरु की कृपा से भक्ति का मार्ग प्रशस्त होता है। अत: ईश्वर की सेवा करो और अपने गुरु से बंदगी निभाओ और दूसरों के हित का कार्य करो। ऐसा अवसर बार-बार नहीं मिलेगा। अत: मनुष्य जीवन मिला है तो सांसारिकता को छोड़कर अच्छे कर्म करो अथवा मानव-मात्र के कल्याण का कार्य करो।

चौरासी बहु दुखै हैं, भवसागर नहीं पार।
औ ओसर मिनखा देह, मिल न वारो वार॥
हर कृपा सुं मिनख तन, गुरु कृपा सूं भक्ति।
उधव बोहुरन पायबो, ऐसी उत्तम जुक्ति॥
हरि सेवा गुरु बंदगी, कर हेतिज सुं भाव।
उधव बहोर न पायबौ, ऐसो उत्तम दाव॥

इस प्रकार न जाने सम्पूर्ण 'पोथो ग्रन्थ ज्ञान' में कितने ही जीवन-मूल्य भरे हुए हैं जो कि वर्तमान के वैश्विक दौर में सम्पूर्ण मानव जाति के लिए प्रासंगिक ही नहीं वरन् आने वाले युगों-युगों तक कालजयी भी हैं।

-जयप्रकाश
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी),
केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 2,
वायुसेना स्थल, जोधपुर
एवं शोधार्थी
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राजस्थान)
मो.: 9460662984
E-mail: jpgodara9152@gmail.com

''जीया नै जुगति मुवां नै मुक्ति''

भारतीय संस्कृति का अपना एक विशद् इतिहास है, जो अपने आप में अति विलक्षण है। इसका मुख्य आधार अध्यात्मवाद है। अध्यात्मवाद की परिणति ही मोक्ष है। मोक्ष भारतीय जीवन का अंतिम सोपान है। इतिहास जो हमें अतीत की घटनाओं से परिचित करवाता है। सोलहवीं शताब्दी के संत युग में भगवान कृष्ण ने ही श्री गुरु जम्भेश्वर के रूप में अवतार लिया और सभी जनमानस को उनतीस धर्म-नियमों के आदेशों पर चलने की प्रतिज्ञा करवाकर के 'जीया नै जुगति मुवां नै मुक्ति' सुगम मार्ग का दिग्दर्शन करवाया एवं 120 शब्दों का प्रचार-प्रसार करके भौतिक युग में विश्व शांति का एक मात्र उपाय बतलाया। जब-जब भी धर्म की हानि होती है और पाप की बढ़ोतरी होती है, तब कोई महापुरुष आता है और पुनः धर्म की पाज बांध देता है। जाम्भो जी स्वयं विष्णु रूप में अवतार लेकर आये। विष्णु ही पुराण पुरुष है। जाम्भो जी स्वयं पुराण पुरुष है।

गीता में कहा भी है -

'अजो नित्यः शाश्वतों अयं पुराणो
कविं पुराणमनु शासिता मणोरणीयां समनुस्मरेदय'

वह परमात्मा पुरुष अजन्मा, नित्य, शाश्वत, अजर व अमर पुराण पुरुष है। पुराण पुरुषों ने विभिन्न अवतार लेकर समय-समय पर धर्म की रक्षा की है। जाम्भोजी ने स्वयं नौ अवतारों का अपना ही रूप बतलाया है। 'नर अवतार नमो नारायण, तेपण रूप हमारा थीयूं' ये शब्द संख्या चौरानवें में बतलाया गया है। भगवान का जन्म और कर्म दोनों ही दिव्य एवं विचित्र है। सुबह का शुभ समय था, विशाल हवन हो रहा था। प्रातः कालीन शुभ बेला में मुकाम मन्दिर से शब्दों की ध्वनि हिमटसर में भ्रमण करते हुए संत मण्डली के कानों में गुंजायमान हुई। उस संत मण्डली में एक बालक वील्हो जी ने ध्यानपूर्वक सुना और आकर्षित होते हुए साधुओं से पूछा, इधर से जो शब्दों की ध्वनि आ रही है वह क्या है? तभी उसी गांव की एक वृद्धा स्त्री ने बताया कि जहां से शब्दों की ध्वनि आ रही है, वहाँ जाम्भा द्वारा है। वील्हो जी को अभी ज्ञान नहीं था। वे अपने साधु-साथियों से कहने लगे मुझे वहाँ ले चलो, जहाँ से ये आवाज आ रही है। उनकी सोयी हुई आत्मा व संस्कार अब जाग गये हैं। वील्हो जी अपने साथियों के साथ मुकाम मन्दिर तक पहुँचे। वील्हो जी ने पहली बार ऐसा विशाल हवन, ऐसी प्रकाशमयी ज्योति देखी, जिसे देखकर वील्हो जी काफी खुश व प्रभावित हुए। शब्दों के श्रवण एवं ज्योति दर्शन से वील्हो जी के अन्दर एवं बाहरी दोनों नेत्र खुल गये थे। गुरु जाम्भो जी की ऐसी चमत्कारी घटना को देखकर वील्हो जी वाह-वाह करते हुए शब्दों का श्रवण करने लगे। प्रथम बार शब्दों को सुनने मात्र से ही वील्हो जी को 120 शब्द कण्ठस्थ हो गये थे। जाम्भो जी द्वारा कहे 120 शब्द मन्त्र केवल नाथो जी को ही कण्ठस्थ थे। नाथो जी ने वील्हो जी के मुख से शब्दों को सुनकर जाम्भो जी की आज्ञानुसार जाम्भो जी का उतराधिकारी जानकार चादर, टोपी एवं माला, जो जाम्भो जी की धरोहर रूप में रखी थी, वो वील्हो जी को देते हुए नाथो जी ने उन्हें अपना शिष्य बना लिया। वील्हो जी की नेत्र ज्योति लौटने की चमत्कारी घटना को देखकर नाथो जी ने विश्वास के साथ जाम्भो जी की लीला द्वारा ही वील्हो जी को अपना शिष्य बना लिया। वील्हो जी ने 120 शब्द मन्त्रों को धारण किया तथा आगे चलकर अपने श्री मुख से शब्द मन्त्रों का प्रचार-प्रसार किया। अब वील्हो जी का अन्धकार दूर हो गया और उन्होंने अपने साधु-साथियों से कहा कि - मैं तो अब यहीं रहूँगा। मुझे मेरा स्थान मिल गया है। मैं अब यहाँ से कहीं नहीं जाऊँगा। लेकिन अब आप लोग अपनी इच्छा अनुसार कहीं भी जा सकते हैं। वील्हो जी ने अपने गुरु नाथो जी से 'गुरु मंत्र' लिया और पंथ व जाम्भो जी के बारे में गुरु नाथो जी से पूछा कि- हे गुरुदेव! इस संसार सागर में युक्तिपूर्वक जीवन एवं मुक्ति किस से हो सकती है। आप इस संसार रूपी सागर से पार होने का रास्ता बतलाइए। नाथो जी ने अपने शिष्य वील्हो जी से कहा कि जाम्भो जी ही हमारे सतगुरु हैं। वहीं हमें इस भवसागर से पार उतारने वाले हैं। नाथो जी ने कहा- हे शिष्य वील्हो जी, मैंने जाम्भो जी को अति निकट रह कर जाना था। मैंने जाम्भो जी का साक्षात्कार एवं श्रवण किया था। नाथो जी को जाम्भो जी ने आदेश दिया था कि- **'नाथिया तूं खड़ि ज्यै मतिना'**। हे नाथा, तूं वियोग में अपने प्राण मत छोड़ देना। जाम्भो जी की कृपा से ही मैंने वील्हो जी को शिष्य बनाकर मन्त्रों के प्रसार व प्रचार का कर्म बतलाकर इस माया रूपी संसार से मुक्ति का रास्ता पाया है। हे शिष्य! यह संसार तो चलायमान है। यहाँ कोई वस्तु स्थिर नहीं है। जाम्भो जी ने बतलाया था कि- **'अनेक चलता दीण कलि का माणस कौन विचारू'**। यहाँ पर सदा-सदा के लिये रहने की कोशिश मत करो। इस आवागमन के फेर

से छुटकारा पाकर अपना जीवन स्वर्गमयी बनाओ। युक्तिपूर्वक जीवन जीने से ही मुक्ति प्राप्त हो सकती है। मुक्ति का अर्थ ही जन्म मरण से छुटकारा पाना है। नाथो जी ने वील्हो जी को जाम्भो जी की समस्त लीलाओं को सविस्तार पूर्वक बतलाया कि गुरु जाम्भो जी ने 7 वर्ष की आयु में पहला मन्त्र 'शब्द' उच्चारित किया-

ओ३म गुरु चीन्हों गुरु चीन्ह पुरोहित, गुरु मुख धर्म बखाणीं।

जो गुरु होयबा सहजे शीले शब्दे वेदे तिहिं गुरु का आंलिकार पिछाणी।

यहाँ जाम्भो जी कहते हैं कि गुरु की पहचान करके ही उसे अपना गुरु बनाना चाहिए। जो सहज व शील स्वभाव का हो, जो अपने शिष्य को इस भवसागर से पार उतारने वाला हो, वहीं वास्तविक गुरु कहलाते हैं। ढ़ोंगी, पाखण्डी पर विश्वास मत करो। गुरु की पहचान करो। फिर 27 वर्ष की आयु तक अपने माता-पिता की सेवा में लगे रहे एवं जीवों पर भी दया भाव रखते हुए गुरुओं की सेवा में भी लगे रहे। जाम्भो जी ने अपने जीवन काल में मनुष्य मात्र को मोक्ष प्राप्ति के लिए 29 धर्म-नियम व 120 शब्द मन्त्रों को बतलाया। जाम्भोजी ने श्रीकृष्ण रूप में अवतार लेकर ही संसार का कल्याण किया व विष्णु जी ने राम रूप में अवतार लेकर बुराइयों का अन्त किया। फिर वे बैकुण्ठवास को सिधार गये। जाम्भो जी ने अनेक लीलाओं द्वारा संसार में अपना परिचय दिया है।

वील्हो जी ने जाम्भो जी का परिचय इस प्रकार दिया-

बरसू सात संसार बाल लीला निरहारी, बरस पाँच बावीस पाल ऐता दिन चारी।

ग्यारै उपर चालीस शब्द कथिया अविनासी, बाल गुवाल गुरु ज्ञान मास तीन परस पच्चासी।

पनरासै रू तिरानवैं, वदि मिगसर नवि आगलै।

पालटे रूप रहियों र, धू इगड जोति संभराथले।

अवतार लेकर जन कल्याण के लिए मानवता का परिष्कृत संविधान मानव मात्र के सामने रखा जो युक्ति-मुक्ति का अमूल्य खजाना है। प्रारम्भ से ही गुरु जी ने दिव्य आलौकिक चमत्कारों से जनमानस को सन्मार्ग में लाने का प्रयास किया है। जाम्भो जी ने स्वयं पाहल बनाकर बिश्नोई मत का प्रवर्तन किया व जन कल्याण का उद्धार किया। वील्हो जी ने मन, वचन, कर्म से पाप एवं हिंसा न करने की बात भी कही हैं। जिस तरह रामायण के वाल्मीकि जी श्री राम को पाने व उनके दर्शन मात्र के लिए आतुर थे, उसी तरह वील्हो जी भी जाम्भोजी को पाने के लिए उत्सुक थे। वाल्मीकि जी को प्रभु श्री राम द्वारा भक्ति एवं मुक्ति राम नाम का जाप करने से मिली। उसी तरह वील्हो जी को जाम्भो जी के शब्द मन्त्रों द्वारा मुक्ति मिली। इसीलिए सत्य कहा गया है कि 'गुरु बिन ज्ञान नहीं होता और ज्ञान बिन मुक्ति नहीं होती'। गुरु स्वयं ज्ञानी व ध्यानी होना चाहिए। तभी वह कीचड़ में फंसे हुए शिष्य को पार उतारेगा। यह संसार तो नश्वर है। तुम यह शरीर नहीं, परन्तु शरीर को चलाने वाली एक आत्मा हो।

तुम मुझे प्रभु, अल्लाह, वाहे गुरु या कहते हो भगवान्।
हे इन्सान तुम तो आत्मा हो मेरी प्यारी सी सन्तान।
तुमने मुझे ढूंढा, पुकारा सदा किया मेरा आह्वान।
सुनो यह खुश खबर .....
मैं अवतरित हो चुका हूँ धरती पर, अब तो कर लो मेरी पहचान।

संसार के इस सृष्टि चक्र में कलियुग का अन्तिम समय चल रहा है। अब इस घोर कलियुग का महाविनाश समीप है, और निकट भविष्य में नई स्वर्णिम सतयुगी दुनिया का सूर्य उदय होने वाला है। अब तो जागो मानव कर लो अपना कल्याण। भारतीय आध्यात्मिक परम्परा में मोक्ष प्राप्त करना ही जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य है। जाम्भो जी एवं वील्हो जी ने जीवितावस्था में मुक्ति प्राप्त करने की बात कही है। नैतिकता, सच्चरित्र और सच्चाई से जीवन व्यतीत करते हुए सत्पुरुष एवं सदगुरु के मार्गदर्शन में सद्कर्म और विष्णु नाम जप से मोक्ष या जीवन बन्धन से मुक्ति प्राप्त की जा सकती है। इसलिए विष्णु का ध्यान अपने हृदय में हर पल रखो। विष्णु भगवान ही आपके सब कष्ट दूर करेंगे।

विष्णु विष्णु तू भणरे प्राणीं, पैंके लाख उपाजूं।
रतन काया बैकूंठे बासे, तेरा जरा मरण भय भाजूं।

संदर्भ-

1. आचार्य कृष्णानन्द- जाम्भा पुराण (बिश्नोई मन्दिर, ऋषिकेश) 2003
2. आचार्य कृष्णानन्द- जम्भसागर (शब्दवाणी) (बिश्नोई मन्दिर, ऋषिकेश) 2003
3. डॉ. मोनिका नरेश- सुन्दर का फल भी सुन्दर, मंगलम पब्लिशर्ज, हिसार (हरियाणा) 2002

-माया

गाँव मंगाली सुरतिया, जि. व तह. हिसार (हरियाणा)

जन्माष्टमी विशेषांक के लिए विज्ञापन हेतु सूचना

आपको सूचित करते हुए अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है कि बिश्नोई सभा, हिसार ने अमर ज्योति के हजारों पाठकों की हार्दिक इच्छा व न्यायोचित मांग का सम्मान करते हुए अमर ज्योति का जन्माष्टमी विशेषांक प्रकाशित करने का निर्णय लिया है। यह भव्य विशेषांक गुरु जम्भेश्वर भगवान के जन्मोत्सव (जन्माष्टमी) के उपलक्ष्य में प्रकाशित होगा, जो अगस्त-सितम्बर, 2020 का संयुक्त अंक होगा। सामाजिक, पर्यावरण व आध्यात्मिक चेतना से जुड़ी समाज की अति लोकप्रिय व विख्यात पत्रिका अमर ज्योति की प्रसार संख्या आठ हजार से भी अधिक है व पाठकों की संख्या एक लाख के लगभग है। अपनी निष्पक्षता, उपयोगिता व स्तरीय प्रकाशन सामग्री व रूचिकर आवरण के कारण इस पत्रिका ने राजस्थान, उत्तरप्रदेश, उत्तराखण्ड, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र सहित पूरे भारत में ही नहीं अपितु नेपाल, इंग्लैंड, अमेरिका आदि देशों के पाठकों के हृदय में भी अपना आदरणीय स्थान बनाया है। आपको ज्ञात ही है कि इस पत्रिका का जब भी विशेषांक प्रकाशित होता है तो वह अपनी ज्ञानवर्धक सामग्री के साथ-साथ अपने मनभावन व सचित्र आवरण के कारण पाठकों के लिए विशेष आकर्षण का केन्द्र बनता है। आज व्यवसाय व महंगाई के युग में भी बिश्नोई सभा, हिसार इस पत्रिका को समाज हितार्थ लागत से भी कम मूल्य में प्रकाशित कर रही है। इसके विशेषांक के प्रकाशन का श्रेय सदैव से ही आप जैसे विज्ञापनदाताओं को रहा है। आगामी विशेषांक में भी अमर ज्योति ने कुछ पृष्ठ विज्ञापन हेतु सुरक्षित करके विज्ञापन दाताओं को एक सुनहरा अवसर दिया है, जिसका सदुपयोग करके वे लाखों पाठकों के हृदय में अपनी गहरी पैठ बना सकते हैं। पत्रिका ने इस वर्ष विज्ञापन दाताओं की पुरजोर मांग का समर्थन करते हुए विज्ञापन रंगीन पृष्ठों पर प्रकाशित करने का निर्णय लिया है। नि:संदेह इससे विशेषांक की भव्यता को चार चांद लगेंगे। अत: जो समाजसेवी, उद्यमी व व्यवसायी बंधु अपनी इस चहेती पत्रिका को विज्ञापन के माध्यम से सहयोग देना चाहते हैं, उनसे निवेदन है कि वे अपना विज्ञापन व निर्धारित धन राशि 5 अगस्त, 2020 तक अमर ज्योति कार्यालय, बिश्नोई मंदिर हिसार में भेज दें। आपके सूचनार्थ-

- विज्ञापन के पृष्ठ सीमित हैं, इसलिए पहले आओ, पहले पाओ के आधार पर ही विज्ञापन स्वीकृत किए जाएंगे।
- विज्ञापन केवल पत्रिका के अंदर के पृष्ठों में ही प्रकाशित होंगे।
- बिश्नोई धर्म व जांभाणी विचारधारा के प्रतिकूल विज्ञापन स्वीकृत नहीं किए जाएंगे।
- विज्ञापन की निर्धारित धनराशि का ड्राफ्ट बिश्नोई सभा, हिसार के नाम भेजें या सीधे हमारे इण्डियन बैंक, हिसार के खाता संख्या 898725571 (खाता धारक- बिश्नोई सभा, हिसार), IFSC - IDIB000H028 में जमा करवाकर उसकी रसीद हमें भेज सकते हैं।
- संभव हो सके तो विज्ञापन सामग्री सी.डी. में या e-mail से भेजें। e-mail का पता है- editor@amarjyotipatrika.com
- अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:- मो. : 8059027929, 9991610029

विज्ञापन दरें:- (अन्दर के पृष्ठ)

पूरा पृष्ठ	10,000 रुपये
आधा पृष्ठ	6000 रुपये
चौथाई पृष्ठ	3500 रुपये

अमर ज्योति का यांत्रिक विवरण
मुद्रित पृष्ठ का आकार 7¼"×9", कॉलम 2

आपके शुभाकांक्षी :

रामनिवास सिहाग
व्यवस्थापक, अमर ज्योति
मो.: 9467090729, 8059027929

डॉ. मनबीर
संपादक, अमर ज्योति
मो.: 9991610029, 9416128792

'बिश्नोई रत्न' चौ. भजनलाल जी की 9वीं पुण्यतिथि पर रक्तदान शिविर आयोजित

हिसार : बिश्नोई सभा, हिसार व अखिल भारतीय गुरु जम्भेश्वर कर्मचारी कल्याण समिति द्वारा प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी 'बिश्नोई रत्न' चौ. भजनलाल जी की 9वीं पुण्यतिथि (3 जून)को श्री बिश्नोई मंदिर, हिसार में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया व चौ. भजनलाल जी को श्रद्धासुमन अर्पित कर श्रद्धांजलि दी गई जिसमें समाज के गणमान्य लोगों ने भाग लिया। इस अवसर पर अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के संरक्षक चौ. कुलदीप बिश्नोई कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे व सर्वप्रथम श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान के हवन यज्ञ मे आहुति दी व चौ. भजनलाल की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस अवसर पर चौ. कुलदीप बिश्नोई ने कहा कि हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री जननायक चौ. भजनलाल जी विरले इंसान थे जिन्होंने सदैव समाज के गरीब, पिछड़े तथा कमजोर वर्ग के उत्थान के लिए काम किया। समाज उत्थान में उनके द्वारा दिये गये सामाजिक योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। इस बार करोना महामारी के मद्देनजर प्रशासन की हिदायतों के अनुसार रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें बड़े उत्साह के साथ रक्तदानियों ने रक्तदान किया। रक्तदान शिविर में चौ. भजनलाल जी को सच्ची श्रद्धांजलि देने के लिए एक ही परिवार के तीन सदस्य एडवोकेट चन्द्र सहारण व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मधुबाला व पुत्र निशांत सहारण ने एक साथ रक्तदान किया। इस अवसर पर आये हुए समस्तजनों ने प्रसाद ग्रहण किया। इस अवसर पर बिश्नोई सभा, हिसार के प्रधान श्री जगदीश चन्द्र कड़वासरा, अखिल भारतीय गुरु जम्भेश्वर सेवक दल के राष्ट्रीय प्रधान सहदेव कालीराणा, अखिल भारतीय गुरु जम्भेश्वर कर्मचारी कल्याण समिति के प्रधान निहाल सिंह गोदारा, सुभाष देहडू (पूर्व प्रधान), रामनारायण धारणीया, वरिष्ठ काग्रेंसी नेता रणधीर पनिहार, राजाराम खिचड़, प्रधान बिश्नोई सभा, आदमपुर, मनोहरलाल गोदारा, धोलुराम भादू, सत्यनारायण कड़वासरा, प्रवीण धारणीया, अध्यक्ष अ. भा.बि. युवा संगठन, डा. सुरेन्द्र बिश्नोई, अवनीश बिश्नोई, श्रवण खीचड, श्रवण सहारण, रमेश गोदारा, शिवकुमार जाणी, कृष्ण शर्मा, विक्रम पंवार, कृष्ण खिचड़ उपप्रधान, रामकुमार जाणी उपप्रधान, अनिल पूनियां कोषाध्यक्ष, मनोज टोहाना, विकास फुरसाणी संयुक्त सचिव व कार्यकारिणी सदस्य अमर सिंह मांझू, औमप्रकाश कड़वासरा, श्रीमति प्रोमिला भांभू, प्रहलाद खिचड़, विजय सिगड़, सुभाष गोदारा, बंसीलाल राहड़, सुभाष सिहाग, भालसिंह सहारण Retd. H.C.S., सुनील मांझू, एडवोकेट अशोक मांझू, रमेश खिचड़, बीरसिंह राहड़, विनोद खिचड़ व हिसार शहर व आस-पास के विभिन्न गांवों से समाज के गणमान्य लोग मौजूद रहे।

- कुलदीप देहडू
सचिव, बिश्नोई सभा, हिसार

चौ. कुलदीप जी बिश्नोई बिश्नोई समाज के सर्वोच्च सम्मान 'बिश्नोई रत्न' से सम्मानित

अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की एक अहम बैठक दिनांक 22.6.2020 को मुकाम स्थित महासभा के मुख्य कार्यालय में हुई, जिसमें राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, उत्तरप्रदेश एंव मध्यप्रदेश सहित देश के विभिन्न क्षेत्रों से बिश्नोई समाज के गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। बैठक की अध्यक्षता महासभा के प्रधान श्री हीराराम भंवाल ने की। इस बैठक में सर्वसम्मति से अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के संरक्षक चौ. कुलदीप बिश्नोई को बिश्नोई समाज के उत्थान के लिए उनके द्वारा किये गये उत्कृष्ट कार्यों के लिए बिश्नोई समाज के सर्वोत्तम सम्मान 'बिश्नोई रत्न' की उपाधि से सम्मानित किये जाने का प्रस्ताव पारित हुआ। बैठक को सम्बोधित करते हुए हीरा राम भंवाल ने कहा कि यह समस्त देश के बिश्नोई समाज के लिए गौरव का क्षण है कि 'बिश्नोई रत्न' जननायक स्व. चौ. भजनलाल जी के बाद कुलदीप बिश्नोई को उनके उत्कृष्ट कार्यों के लिए महासभा ने उन्हें "बिश्नोई रत्न" की उपाधि से सम्मानित करने का निर्णय लिया है। उन्होंने कहा कि पिछले दो दशकों से भी अधिक समय से कुलदीप बिश्नोई राष्ट्रीय स्तर पर बहुत ही सूझबूझ से बिश्नोई समाज को एकता के सूत्र में पिरोकर बिश्नोई समाज को नई पहचान दे रहे हैं। जिस प्रकार से चौ. भजनलाल जी ने अपने कार्यों से बिश्नोई समाज को राष्ट्रीय स्तर पर अलग पहचान दिलाई थी, उन्हीं के पद्चिह्नों पर चलते हुए कुलदीप बिश्नोई ने राजनीति से उपर उठकर हमेशा समाज को उंचा स्थान दिया और जब-जब समाज की प्रतिष्ठा पर बात आई तो उन्होंने हमेशा अपने अथक प्रयासों से बिश्नोई समाज के गौरव पर कभी आंच नहीं आने दी।

श्री हीराराम भंवाल ने कहा कि चौ. कुलदीप बिश्नोई ने समाज को एक सूत्र में बांधा है। उनके प्रयासों से ही आज बिश्नोई समाज राजनीतिक व सामाजिक स्तर पर पूरे देश में अपनी एक विशेष पहचान रखता है। समाज से जुड़े हर संवेदनशील मुद्दे को कुलदीप बिश्नोई ने हमेशा गंभीरता दिखाते हुए बड़ी ही सूझबूझ से उसको सुलझाया। सलमान खान शिकार प्रकरण, गुडगांव में धर्मशाला, दिल्ली संस्थान भवन के लिए जमीन से सम्बंधित कार्य हरिद्वार में धर्मशाला की जमीन का

मामला हो, समाज से जुड़े नेताओं को टिकट के लिए राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस या भाजपा के बड़े नेताओं के समक्ष पैरवी करना हो, बिश्नोई समाज के सभी मुख्य सामाजिक कार्यों में बढ़चढ़ कर भाग लेना हो, समाज के छात्रों को विभिन्न बड़े शिक्षण संस्थानों में दाखिला दिलवाना हो, रोजगार दिलवाना हो या फिर हाल ही में घटित हुआ विष्णुदत्त बिश्नोई प्रकरण हो, जिसमें उन्होंने सीबीआई जांच की मांग को लेकर अपनी ही पार्टी के मुख्यमंत्री के खिलाफ आंदोलन तक की चेतावनी दे दी थी।

श्री हीराराम भंवाल ने कहा कि पिछले काफी समय देश के विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले बिश्नोई समाज के गणमान्य व्यक्तिओं द्वारा यह मांग उठाई जा रही थी कि कुलदीप बिश्नोई को उनके कार्यों के लिए 'बिश्नोई रत्न' की उपाधि से सम्मानित किया जाए। सैंकड़ों पत्रों, सोशल मीडिया के माध्यम से महासभा के पास लोगों की पुरजोर से यह मांग आ रही थी। बिश्नोई समाज की भावनाओं को देखते हुए अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा ने बैठक बुलाने का निर्णय किया और सभी लोगों की सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया है कि 'बिश्नोई रत्न' स्व. चौ. भजनलाल की तरह ही कुलदीप बिश्नोई को भी 'बिश्नोई रत्न' की उपाधि से महासभा उनका सम्मान करेगी। संरक्षक कुलदीप बिश्नोई ने यह सम्मान ग्रहण से मना कर दिया है, जो उनकी त्याग की भावना को दर्शाता है, परंतु महासभा ने सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया है कि उनके मना करने के बावजूद महासभा उन्हें इस सम्मान से सम्मानित करेगी, ताकि उनका मनोबल बढ़ सके और समाज के युवाओं के सामने एक आदर्श उदाहरण पेश किया जा सके।

-जगदीश चन्द्र कड़वासरा
प्रधान, बिश्नोई सभा, हिसार

चौ. भजनलाल जी की पुण्यतिथि पर 'जन प्रेरणा स्थल' पर श्रद्धांजलि कार्यक्रम

आदमपुर : चौ. कुलदीप बिश्नोई संरक्षक अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा व विधायक आदमपुर ने 3 जून को "बिश्नोई रत्न" जननायक चौ. भजनलाल जी की 9वीं पुण्यतिथि पर आदमपुर स्थित उनकी समाधि 'जनप्रेरणा स्थल' पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें नमन किया। इस अवसर पर चौ. दूड़ाराम, विधायक फतेहाबाद, श्रीमती रेणुका बिश्नोई पूर्व विधायिका हांसी व आदमपुर, द्वारका प्रसाद, रणधीर पनिहार, जयवीर गिल, विनोद ऐलावादी, सुभाष देहडू, राजाराम खिचड़, विक्रांत बिश्नोई सहित क्षेत्र के जनप्रतिनिधि एवं सर्वसमाज के गणमान्य व्यक्तियों ने जननायक चौ. भजनलाल जी की समाधि पर पुष्प अर्पित कर उन्हें शत्-शत् नमन किया। चौ. कुलदीप बिश्नोई ने कहा कि हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री 'बिश्नोई रत्न' चौ. भजनलाल जी विरले इंसान थे, जिन्होंने सदैव समाज के गरीब, पिछड़े तथा कमजोर वर्ग के उत्थान के लिए काम किया। भले ही वे आज हमारे बीच मौजूद नहीं है पंरतु जनता अपने महान नेता को सदैव अपने दिल में जिंदा रखेगी। पिछले 9 वर्षों से मुझे पारिवारिक, सामाजिक तथा राजनैतिक स्तर पर उनकी कमी महसूस हुई परन्तु एक अद्वितीय शक्ति के रूप में वे सदा मेरे साथ रहेंगे और उनके संस्कार मुझे लोगों के हितों के लिए संघर्ष

करने की प्रेरणा देते रहते है। उन्होंने कहा कि चौ. भजनलाल राजनीति में होते हुए भी सदैव सामाजिक रूप से सक्रिय रहे हैं। विरोधियों को भी अपना बनाने की उनकी कला का हर कोई मुरीद था। विधायक, सांसद, केन्द्रीय मन्त्री तथा मुख्यमंत्री के ओहदे पर रहते हुए उन्होंने समाज की 36 बिरादरी व प्रदेश के हर क्षेत्र का समान चहुंमुखी विकास करवाया। यही कारण है कि प्रदेश के हर क्षेत्र में उनकी गहरी पैठ रही और उनके परिवार ने राज्य के हर क्षेत्र से न केवल चुनाव लड़े बल्कि जीत भी दर्ज की। ऐसी महान शख्सियत के जीवन से सदैव प्रेरणा मिलती रहेगी।

- राम निवास सिहाग
व्यवस्थापक, अमर ज्योति 'पत्रिका'

पंचदिवसीय ऑनलाइन जाम्भाणी बाल संस्कार शिविर सफलतापूर्वक संपन्न

बीकानेर: जांभाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर द्वारा 11-15 जून तक पांच दिवसीय ऑनलाइन जांभाणी बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्घाटन शिविर के संयोजक आचार्य सच्चिदानंदजी लालासर साथरी ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया। अकादमी के महासचिव डॉ. सुरेन्द्र कुमार ने सभी प्रतिभागियों और अतिथियों का स्वागत किया। उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप बोलते हुए आई.पी.एस. श्री देवेंद्र बिश्नोई ने बताया की संस्कारित और अनुशासित मनुष्य जीवन की बड़ी से बड़ी बाधाओं को भी सहजता से पार कर जाता है। शिविर के शेष 4 दिनों में विभिन्न विद्वानों, संतों, साहित्यकारों, बुद्धिजीवियों व शिक्षकों ने गुरु जाम्भोजी के दर्शन, साहित्य, शिक्षाओं व जांभाणी तीर्थ स्थलों आदि पर विस्तार से प्रकाश डाला। शिविर के समापन दिवस पर बोलते हुए कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आई.पी.एस. प्रेमसुख डेलू एवं अकादमी के अध्यक्ष कृष्णानन्द आचार्य ने बच्चों को प्रेरित करते हुए कहा की आप में लगन और दृढ़ संकल्प है तो कोई भी कार्य मुश्किल नहीं होता, मंजिल अवश्य ही मिलेगी। शिविर में 611 बच्चों का रजिस्ट्रेशन हुआ था जिनमें से अधिकांश ने इसे जूम एप और दूसरे हजारों बच्चों और अभिभावकों ने इसे अकादमी के फेसबुक पेज पर निरंतर देखा और सुना। शिविर का तकनीकी निर्देशन अकादमी की आई.टी. समिति के संयोजक डॉ. लालचंद बिश्नोई ने कुशलतापूर्वक किया।

- मोहनलाल खिलेरी
शिविर व्यवस्था प्रभारी, सोनड़ी, बाड़मेर

विश्व पर्यावरण दिवस पर त्रिदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार आयोजित

जोधपुरः श्री गुरु जम्भेश्वर पर्यावरण सरंक्षण शोधपीठ जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर और जाम्भाणी साहित्य अकादमी के संयुक्त तत्त्वावधान में 3 से 5 जून, 2020 को 'वैश्विक पर्यावरण की वर्तमान चुनौतियां, जैव विविधता और श्री गुरु जम्भेश्वर जी के सिद्धांत एवं समाधान' विषय पर आयोजित त्रिदिवसीय विश्व पर्यावरण दिवस जाम्भाणी वेबीनार सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। इस वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस 2020 जो कि बायोडाईवरसिटी (जैव-विविधता) थीम पर मनाया जा रहा है। जांभाणी साहित्य अकादमी के संस्थापक और कार्यकारणी सदस्य महेश धायल ने बताया की संगोष्ठी के मुख्य सूत्रधार और निर्देशक गुरु जम्भेश्वर पर्यावरण सरंक्षण शोधपीठ JNVU, जोधपुर के प्रोफेसर जेताराम बिश्नोई ने हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी संगोष्ठी आयोजन के लिए महामारी के कारण वेबिनार के तहत आयोजित करवाने का बीड़ा उठाया। इसमें देशभर और कई देशों से तीन हजार से अधिक विद्वानों, शोधकर्ताओं, वक्ताओं, कवियों और श्रोताओं ने भाग लिया।

उद्घाटन सत्र को दीप प्रज्जवलित करके शुभारम्भ किया गया जिसके मुख्यअतिथि राजस्थान सरकार में वन एवं पर्यावरण मंत्री सुखराम बिश्नोई, अध्यक्षता जय नारायण व्यास विश्विद्यालय के कुलपति प्रोफेसर डॉ. प्रवीण चंद्र त्रिवेदी जी ने की। समारोह के विशिष्ट अतिथि श्री महेंद्र बिश्नोई विधायक लूणी ओर वेबिनार संरक्षक डॉ. आर के बिश्नोई और डॉ. ओमप्रकाश ढुकिया उपस्थित रहे जिसमें जम्भधारा शोध पत्रिका का विमोचन किया। तीन दिनों में दस सत्रों का आयोजन किया गया। समापन सत्र को मुख्य अतिथि श्री जसवंतसिंह बिश्नोई पूर्व सांसद और पूर्व मंत्री राजस्थान सरकार और अध्यक्षता गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार के कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार, निदेशक शुष्क वन अनुसंधान संस्थान जोधपुर से डॉ. एम. आर बालोच ओर अकादमी के महासचिव सुरेंद्र खीचड़ आदि ने संबोधित किया।

'आओ हम सभी पर्यावरण बचायें' के तहत विभिन्न सत्रो में हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार से प्रो. मदन खीचड़, प्रो. राजेन्द्र पुरोहित बीकानेर, प्रो. कृष्ण कुमार कौशिक दिल्ली, डॉ. हेमू चौधरी, प्रो. दिनेश चहल केंद्रीय विश्वविद्यालय महेन्द्रगढ़ हरियाणा, डॉ. गजेन्द्रसिंह वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग, आचार्य पीठ मुक्तिधाम मुकाम से आचार्य डॉ. गोवर्धन राम शिक्षाशास्त्री, तकनीकी शिक्षा विभाग राजस्थान के निदेशक इंजीनियर दरियाव सिंह यादव, सिंगापुर से डॉ. सुमन कुमावत, डॉ. हेमसिंह गहलोत- सहायक आचार्य प्राणी शास्त्र जोधपुर विश्वविद्यालय, डॉ. प्रीति बिश्नोई, प्राचार्या श्री मोती मेमोरियल महाविद्यालय भावी, कानपुर विधायक सलील बिश्नोई, मुम्बई विश्वविद्यालय मुम्बई से प्रो. करुणाशंकर उपाध्याय, पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ से प्रो. अशोक सभ्रवाल, केरल के शंकराचार्य विश्वविद्यालय से डॉ. पी. एच. इब्राहिम कुट्टी, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हिसार से प्रो. कृपाराम बिश्नोई, बंसीलाल विश्वविद्यालय भिवानी से प्रो. बाबुराम, विभागाध्यक्ष हिन्दी जेएनयू जोधपुर से प्रो. कैलाश कौशल, अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरणविद ग्रीनमैन विजयपाल बघेल 'हरितऋषि, गाजियाबाद, डूंगर महाविद्यालय से डॉ. श्याम सुन्दर जाणी, अकादमी की संरक्षिका डॉ. सरस्वती बिश्नोई, देहरादून से पद्मश्री प्रसिद्ध पर्यावरणविद डॉ. अनिल प्रकाश जोशी, नार्थ विश्वविद्यालय टैक्शास (यूएसए) से डॉ. प्रो. पंकज जैन, मध्यप्रदेश सरकार में पूर्व मंत्री रहे अजय बिश्नोई, केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान जोधपुर के निदेशक डॉ. ओ. पी. यादव, विज्ञान संकाय जोधपुर के अधिष्ठाता प्रो. अशोक पुरोहित, लंदन से डॉ. बीकू राठौड़, इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय दिल्ली से डॉ. सुमित ढुकिया, किशनाराम बिश्नोई विधायक लोहावट (जोधपुर), महामहौपाध्याय डॉ. वेद प्रकाश आचार्य बिश्नोई पूर्व कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार, प्रो. ब्रजेश कुमार दुबे आईआईटी खड़गपुर, फ्रांस से फ्रैंक वोगल, दुबई से आर. के बिश्नोई सहित अनेक वक्ताओं ने पत्रवाचन किया।

-विकास बैनीवाल
सेक्टर-14, हिसार

बिश्नोई समाज के प्रमुख धाम

जाम्भाणी पर्व एवं अमावस्या

सम्वत् 2077 श्रावण की अमावस्या

लगेगी: 19.7.2020 रविवार रात में 12 बजकर 09 मिनट पर
उतरेगी: 20.7.2020 सोमवार रात में 11 बजकर 02 मिनट पर

सम्वत् 2077 भाद्रपद की अमावस्या

लगेगी: 18.8.2020 मंगलवार दिन में 10 बजकर 39 मिनट पर
उतरेगी: 19.8.2020 बुधवार प्रातः 08 बजकर 11 मिनट पर

बारासण मेला- 20.07.2020, **जागरण**-19.07.2020 रात्रि व **हवन व मेला**-20.07.2020 सोमवार। **जन्माष्टमी मेला**- पीपासर, जोधपुर, हिसार, मेहराणा धोरा, लोहावट, फिटकासनी, लाम्बा, धोरीमन्ना, मालवाड़ा, सक्ताखेड़ा, हिम्मतपुरा, डबवाली। **जागरण**-11.8.2020 रात्रि, **हवन व मेला**-12.8.2020 बुधवार (भादवा बदि अष्टमी)। **भाद्रपद अमावस मेला**- रामड़ावास, जांगलू, सोनड़ी, मेघावा, भींयासर, रणीसर। **जागरण**- 18.8.2020 रात्रि, **हवन व मेला**-19.8.2020 बुधवार। **खेजड़ली शहीदी मेला**- **जागरण**- 27.8.2020 रात्रि गुरुवार, **हवन व मेला**- 28.8.2020 शुक्रवार भादवा सुदी दशमी।

उनतीस धर्म नियम

- तीस दिन सूतक रखना।
- पांच दिन ऋतुवन्ती स्त्री का गृहकार्य से पृथक् रहना।
- प्रतिदिन सवेरे स्नान करना।
- शील का पालन करना व संतोष रखना।
- बाह्य और आन्तरिक पवित्रता रखना।
- द्विकाल संध्या-उपासना करना।
- संध्या समय आरती और हरिगुण गाना।
- निष्ठा और प्रेमपूर्वक हवन करना।
- पानी, ईंधन और दूध को छान कर प्रयोग में लेना।
- वाणी विचार कर बोलना।
- क्षमा-दया धारण करना।
- चोरी नहीं करनी।
- निन्दा नहीं करनी।
- झूठ नहीं बोलना।
- वाद-विवाद का त्याग करना।
- अमावस्या का व्रत रखना।
- विष्णु का भजन करना।
- जीव दया पालणी।
- हरा वृक्ष नहीं काटना।
- काम, क्रोध आदि अजरों को वश में करना।
- रसोई अपने हाथ से बनानी।
- थाट अमर रखना।
- बैल बधिया नहीं कराना।
- अमल नहीं खाना।
- तम्बाकू का सेवन नहीं करना।
- भांग नहीं पीना।
- मद्यपान नहीं करना।
- मांस नहीं खाना।
- नीला वस्त्र व नील का त्याग करना।

RNI No. : 12406/57
POSTAL REGD. NO. : L/RNP/01/HSR/2020-2022

POSTAGE PREPAID IN CASH
POSTED AT : HISAR H.O.
POSTING DATE : 1st OF EVERY MONTH

मुद्रक, प्रकाशक जगदीशचन्द्र कड़वासरा, प्रधान, बिश्नोई सभा, हिसार ने डोरेक्स ऑफसेट प्रिंटर्स, हिसार से बिश्नोई सभा, हिसार के लिए मुद्रित करवाकर 'अमर ज्योति' कार्यालय, श्री बिश्नोई मन्दिर, हिसार से दिनांक 1 जुलाई, 2020 को मुख्य डाकघर, हिसार से प्रेषित किया।

DOREX® Printers 9896011117